1. कला में श्रम की गरिमा : श्रमिक दिवस पर एक विशेष चिंतन
2. लियोनार्डो दा विंची: पुनर्जागरण युग का सार्वभौमिक प्रतिभा - कुशाग्र जैन
3. म्यूरल पेंटिंग - संदीप पूरी
4. टंग ट्विस्टर्स: हमारे जीवन में रचनात्मक योगदान - अशोक मेनारिया
5. फ्रांसिस्को गोया की कृति - 3 मई 1808 - डॉ . भूपत राम
6. जोस रुइज़ वाई ब्लास्को: पाब्लो पिकासो के पिता और कला शिक्षक - कुशाग्र जैन
7. एक जन्मतिथि, तीन कलात्मक शिखर: सल्वाडोर डाली, याकोव अगाम, और स्लावा इल्यायेव - अशोक मेनारिया
8. कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस - डॉ. भूपत राम
9. ज़ॉर्ज़ ब्राक: घनवाद के सह-शिल्पी और आधुनिक कला के प्रणेता - कुशाग्र जैन
10. फ्रांज़ क्लाइन (Franz Kline): अमूर्त अभिव्यंजनावाद के एक सशक्त हस्ताक्षर - कुशाग्र जैन
11. विद्यालयों में एक्सपेरिमेंटल लैब की आवश्यकता - निहारिका जैन
12. उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला: सांस्कृतिक धरोहर के रूप और रंग - डॉ. मंतोष यादव
13. समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका: एक आलोचनात्मक अध्ययन - कुशाग्र जैन
14. शिक्षा में विश्वविद्यालयी अंतःक्षेप एवं अनुसंधान की महत्ता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन - रश्मि गौतम
15. रंग चित्र - कुशाग्र जैन

कुशाग्र जैन, कला में श्रम की गरिमा : श्रमिक दिवस पर एक विशेष चिंतन, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 2-3*

कला में श्रम की गरिमा : श्रमिक दिवस पर एक विशेष चिंतन

कुशाग्र जैन*

हर वर्ष **1 मई** को हम **अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस** मनाते हैं–एक ऐसा दिन जो श्रमिकों के अधिकारों, सम्मान और योगदान को श्रद्धांजलि देता है। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि समाज की नींव सिर्फ विचारों या नीतियों से नहीं, बल्कि मेहनत से बनती है। और जब हम मेहनत की बात करते हैं, तो कला और कलाकारों की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण बन जाती है।

जब हम 'श्रमिक' शब्द सुनते हैं, तो हमारे मन में अक्सर फैक्ट्री में काम करता मजदूर, खेत जोतता किसान, या निर्माण स्थल पर ईंट ढोता व्यक्ति आता है। पर क्या आपने कभी एक चित्रकार के रंगों को उकेरते हाथों को देखा है? क्या एक मूर्तिकार की हथौड़ी की आवाज किसी लोहार की चोट से कम श्रमसाध्य है? क्या एक कवि का हर शब्द हृदय और मस्तिष्क का परिश्रम नहीं है?

कला, अपने आप में श्रम की पराकाष्ठा है। हर कलाकृति – चाहे वह कविता हो, नृत्य, संगीत, चित्र या मूर्ति – श्रम के पसीने से जन्म लेती है।

श्रम के सौंदर्य को अभिव्यक्त करती है कला

कला का एक अनोखा गुण है: वह श्रम को सिर्फ दिखाती नहीं, उसका **सम्मान** भी करती है। लोककला में खेतों का जीवन, मजदूरों के गीत, और कारीगरों की कहानियाँ रची जाती हैं। नाटक, सिनेमा और साहित्य में मज़दूरों के संघर्षों को स्वर दिया जाता है। चित्रकला में एक मजदूर के हाथ, एक बुनकर की आंखें, या एक किसान का चेहरा अमर किया जाता है।

कलाकार सिर्फ कल्पना में नहीं जीता। वह अपने विचारों को आकार देने के लिए दिन-रात काम करता है। एक कवि जब शब्दों को साधता है, वह भी किसी श्रमिक की तरह श्रम करता है – बस उसका औजार कलम होती है। एक नर्तकी जब मंच पर उतरती है, तो हर गति में वर्षों का अभ्यास और परिश्रम समाया होता है।

1 मई को नई दृष्टि से देखें

इस श्रमिक दिवस पर क्यों न हम श्रम के साथ-साथ **सृजन** को भी सलाम करें? क्यों न हम एक चित्रकार के रंग, एक कुम्हार के चाक, एक बुनकर की उंगलियाँ और एक लेखक की कलम को भी उतना ही महत्व दें, जितना एक कारखाने या खेत के मजदूर को?

क्योंकि असल में –

हर कलाकार एक श्रमिक है। और हर श्रमिक, अपने आप में एक कलाकार।

1 मई हमें याद दिलाता है कि श्रम और कला दोनों ही समाज की आत्मा हैं। जहां श्रम जीवन को चलाता है, वहीं कला उसे अर्थ देती है। इसलिए इस दिन, केवल अधिकारों की बात न करें – **रचनात्मक श्रम का भी उत्सव मनाएँ**।

विश्व की कुछ प्रमुख कलाकृतियाँ जो श्रम से जुड़ी हैं:

1. "The Gleaners" – Jean-François Millet (1857, फ्रांस)

यह विश्व प्रसिद्ध चित्र तीन ग्रामीण स्त्रियों को खेत से बचे हुए अनाज के दाने बीनते हुए दर्शाता है। यह चित्र गरीब किसानों की कठिनाइयों और गरिमा दोनों को उजागर करता है। यह चित्र श्रमिक वर्ग के प्रति करुणा और सम्मान का प्रतीक बन गया है।

2. "Workers" Series – Diego Rivera (मेक्सिको)

रिवेरा की भित्ति चित्रों (murals) में मेक्सिको के श्रमिकों, किसानों, और उद्योगपतियों के बीच संघर्ष को दिखाया गया है। उसकी कला ने श्रमिकों की शक्ति और आत्मसम्मान को अभिव्यक्ति दी।

3. "Iron Rolling Mill" – Adolph Menzel (1875, जर्मनी)

यह चित्र जर्मनी की औद्योगिक क्रांति के दौर के एक इस्पात कारखाने को दर्शाता है, जहाँ मजदूर कठिन परिश्रम कर रहे हैं। यह श्रमिक जीवन की कठोरता, गर्मी, और श्रम की महिमा को बहुत यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है।

4. "Stone Breakers" – Gustave Courbet (1849, फ्रांस)

इस चित्र में दो श्रमिक पत्थर तोड़ते हुए दिखाए गए हैं – एक युवा और एक वृद्ध। यह श्रम का कठोर यथार्थ और पीढ़ियों तक चलने वाली मेहनत को दर्शाता है। इसे श्रमिक वर्ग की दुर्दशा पर बनी पहली यथार्थवादी कृति माना जाता है।

5. "The Weavers" – Käthe Kollwitz (जर्मनी)

Kollwitz के चित्र और रेखाचित्र बुनकरों की हड़ताल और उनके जीवन संघर्ष को दर्शाते हैं। उन्होंने श्रमिकों के दर्द, क्रोध और संघर्ष को गहराई से उकेरा।

इन कृतियों से हमें क्या सीख मिलती है?

इन सभी कलाकृतियों में एक बात समान है – **श्रम का सम्मान**। चाहे वह खेत में काम करती स्त्रियाँ हों, फैक्ट्री में पसीना बहाते मजदूर हों, या हथौड़ी-छेनी थामे कारीगर – कलाकारों ने उन्हें सिर्फ कैनवास पर नहीं उतारा, बल्कि उन्हें समाज के *नायक* की तरह चित्रित किया।

कुशाग्र जैन, लियोनार्डो दा विंची: पुनर्जागरण युग का सार्वभौमिक प्रतिभा, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 4-5*

लियोनार्डो दा विंची: पुनर्जागरण युग का सार्वभौमिक प्रतिभा

कुशाग्र जैन*

लियोनार्डो दा विंची (15 अप्रैल 1452 - 2 मई 1519) का नाम ही इतिहास के सबसे महान और प्रभावशाली व्यक्तित्वों में आता है। उनका योगदान केवल कला तक सीमित नहीं था, बल्कि वे एक वैज्ञानिक, अभियंता, आर्किटेक्ट, चिकित्सक, और दार्शनिक भी थे। उनका जीवन और कार्य एक अद्‌वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है कि कैसे एक व्यक्ति अपने ज्ञान और प्रतिभा के माध्यम से दुनिया को बदल सकता है। लियोनार्डो का जीवन और उनके कार्य एकमात्र संयोग नहीं थे, बल्कि उन्होंने अपनी अनगिनत कला कृतियों और विज्ञान में योगदान से हर क्षेत्र में स्थायी छाप छोड़ी।

लियोनार्डो का जन्म 15 अप्रैल 1452 को इटली के एक छोटे से गाँव विंची में हुआ था। वे एक अवैध संतान थे और उनका पालन-पोषण उनके दादा-दादी के द्‌वारा किया गया था। उनके पिता एक समृद्‌ध वकील थे, जबकि उनकी माँ एक किसान परिवार से थीं। हालांकि, लियोनार्डो को अपनी माँ के साथ समय बिताने का अवसर बहुत कम मिला, लेकिन यह अनुभव उनकी कला और सोच में एक नया दृष्टिकोण लेकर आया।

लियोनार्डो की कला शिक्षा का आरंभ फ्लोरेंस में हुआ था। वे प्रसिद्‌ध चित्रकार एंड्रिया डेल वेरोच्चियो के अधीन 14 वर्ष की आयु में कला सीखने आए थे। यहाँ, उन्होंने चित्रकला, मूर्तिकला, धातु-निर्माण, यांत्रिकी और वास्तुकला में प्रशिक्षण लिया। उनके काम का प्रारंभिक प्रभाव वेरोच्चियो पर था, लेकिन बहुत जल्दी उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनानी शुरू कर दी।

1476 में, लियोनार्डो ने फ्लोरेंस छोड़ दिया और मिलान चले गए, जहाँ उन्होंने स्फोर्जा परिवार के दरबार में काम करना शुरू किया। मिलान में रहते हुए उन्होंने कई महत्वपूर्ण कृतियाँ बनाई, जिनमें द लास्ट सपर और वर्जिन ऑफ द रॉक्स जैसी प्रसिद्‌ध पेंटिंग शामिल हैं।

द लास्ट सपर (1495-1498) शायद उनकी सबसे प्रसिद्‌ध कृति है, जिसमें उन्होंने मसीह और उनके शिष्यों के बीच के गहरे भावनात्मक संबंध को दर्शाया। इस चित्र में प्रत्येक पात्र का व्यक्तित्व और उनकी भावनाओं को बहुत ही गहराई से व्यक्त किया गया है, जो उस समय के अन्य चित्रकला कार्यों से बहुत अलग था। इसके अलावा, वर्जिन ऑफ द रॉक्स ने उनकी तकनीकी कुशलता और रंगों के मिश्रण में अद्‌वितीयता को प्रदर्शित किया।

लियोनार्डो दा विंची केवल एक महान कलाकार नहीं थे, बल्कि एक खोजी मनोवृत्ति वाले वैज्ञानिक भी थे। वे विज्ञान, गणित, और शरीर रचनाओं पर गहरे विचार करते थे। उन्होंने अपने नोटबुक्स में हज़ारों स्केच बनाए, जिसमें उड़ने वाली मशीनों से लेकर मानव शरीर के अंगों की संरचना तक सभी विषयों पर विस्तार से लिखा था।

उन्होंने मानव शरीर के हर अंग का विस्तृत अध्ययन किया और शरीर रचनाओं के बारे में कई वैज्ञानिक लेखन तैयार किए। उनका एक प्रमुख कार्य था मानव शरीर के अवयवों का चित्रण करना, जिसमें उन्होंने मांसपेशियों, हड्‌डियों, और रक्त वाहिकाओं के अंदरूनी संरचनाओं का सटीक चित्रण किया। इसके अलावा, उन्होंने हवाई जहाज और सैन्य मशीनों के बारे में भी कई डिजाइन बनाए थे, हालांकि वे कभी पूरी तरह से निर्माण में नहीं लाए गए।

लियोनार्डो का नाम आज सबसे अधिक मोनालिसा के साथ जुड़ा हुआ है। यह चित्र 1503 में शुरू किया गया था और इसे लियोनार्डो के जीवन का एक अद्वितीय कृति माना जाता है। मोनालिसा की मुस्कान और उसकी आँखों में जो रहस्यमयी भावनाएँ व्यक्त होती हैं, उन्होंने इसे कला की सबसे महान कृतियों में से एक बना दिया। यह चित्र आज भी लूव्र संग्रहालय, पेरिस में प्रदर्शित है और इसे दुनिया की सबसे प्रसिद्ध पेंटिंग माना जाता है।

लियोनार्डो के अंतिम वर्षों में उनका स्वास्थ्य काफी खराब हो गया था। 1517 में वे फ्रांसीसी राजा फ्रांसिस प्रथम के निमंत्रण पर फ्रांस में आकर बसे थे। वहां, उन्होंने कई और काम किए, लेकिन उनकी स्थिति deteriorating थी। एक दिन, वे एक स्ट्रोक से पीड़ित हो गए, जिससे उनका दाहिना भाग लकवाग्रस्त हो गया था। हालांकि, इसके बावजूद उन्होंने अपनी कृतियों पर काम जारी रखा। 2 मई 1519 को उनका निधन हो गया और उन्हें फ्रांस के अम्बोइस में दफनाया गया।

लियोनार्डो दा विंची की कृतियों ने न केवल उनकी पीढ़ी को प्रभावित किया, बल्कि आने वाली कई पीढ़ियों तक उनके कार्यों का प्रभाव बना रहा। उनके चित्रकला के नए दृष्टिकोण, जैसे कि स्फुमातो तकनीक, ने चित्रकला की दुनिया में एक क्रांति ला दी। इसके साथ ही, उनके वैज्ञानिक और तकनीकी विचार आज भी हमें प्रेरित करते हैं।

लियोनार्डो की प्रमुख कृतियाँ जैसे द लास्ट सपर, मोनालिसा, वर्जिन ऑफ द रॉक्स और उनके हजारों स्केच और नोटबुक्स उनके अद्वितीय योगदान के प्रतीक हैं। उनके कार्य न केवल कला के क्षेत्र में, बल्कि विज्ञान, इंजीनियरिंग और चिकित्सा के क्षेत्र में भी प्रभावी रहे हैं।

"सादगी ही सर्वोत्तम सौंदर्य है।" – लियोनार्डो दा विंची

लियोनार्डो दा विंची की यह पंक्ति उनके जीवन की पूरी philosophy को संक्षेप में प्रस्तुत करती है। उन्होंने हमेशा अपने कार्यों को सरलता और शुद्धता के साथ प्रस्तुत किया, और यही कारण है कि उनकी कृतियाँ आज भी जीवित हैं। उनका जीवन एक प्रेरणा है कि कैसे एक व्यक्ति अपने ज्ञान और प्रतिभा के माध्यम से समाज को नई दिशा दे सकता है।

म्यूरल पेंटिंग

संदीप पूरी*

म्यूरल पेंटिंग भिति चित्रण की एक प्राचीन विद्या है जिसके खूब परम्परागत रूप विद्यमान है तथा भारत में भी यह विधि जयपूर अरायश व टेम्परा के नाम से जानी जाती है। म्यूरल पेंटिग के सबसे प्राचीन उदाहरण स्पेन की अल्ताभिरा गुफा से प्राप्त हैं जबकि भारत में म्यूरल पेंटिग के सबसे प्राचीन साक्ष्य अजंता व बाघ गुफा में विद्यमान हैं।

म्यूरल पेंटिंग के प्रकार

फ्रेस्को ब्यूनो - यह इटली की भिति चित्र तकनीक है जिसके प्राचीन साक्ष्य हमें नासोस (यूनान) से प्राप्त हुआ है। इस तकनीक के अंर्तगत चूना पत्थर व बालू मिलाकर कई महीनो पहले भित्ति तैयार की जाती है। तथा इसके बाद इसके सूखने पर शंख चूर्ण व चूना पत्थर का लेप लगाया जाता है यह लेप उतने ही धरातल पर लगाया जाता है जितने पर चित्रण का काम पूरा किया जा सके क्योंकि इस विद्या की विशेषता यह है कि इसमें चित्रण गीली भिति पर ही किया जाता है। ये चित्र अधिक टिकाऊ होते है।

फ्रेस्को सेको - यह मिति चित्रण की तकनीक फ्रेस्को ब्यूनो की भाँति ही होती है। बस अंतर इतना होता है कि इसमें धरातल सूखा रखा जाता है यह फ्रेस्को ब्यूनो की अपेक्षा में इसके चित्र ज्यादा लम्बे समय तक नहीं सकते।

जयपुर फ्रेस्को - यह भारत में प्रचलित फ्रेस्को ब्यूनो (इटली) की भाँति तकनीक होती है। जो वर्तमान में सिखाई जाती है। इस के लिए सितम्बर से मार्च का समय उचित माना जाता है। इसे अरायश पद्धति के नाम से भी जाना जाता है।

टेम्परा ग्लू तकनीक - भिति चित्रण की इस तकनीक में पायस के रूप में अण्डे की जर्दी या सरेस रंगों में मिलाकर प्रयोग लाया जाता है तथा भिति को तैयार करते समय सुधा लेप लगाया जाता है।

अशोक मेनारिया, टंग ट्विस्टर्स: हमारे जीवन में रचनात्मक योगदान, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 7-8*

टंग ट्विस्टर्स: हमारे जीवन में रचनात्मक योगदान

अशोक मेनारिया*

टंग ट्विस्टर्स (Tongue Twisters) वे शब्द या वाक्य होते हैं, जो उच्चारण के दृष्टिकोण से विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण होते हैं। ये शब्दों के मिलाजुला रूप होते हैं जो जल्दी बोलने पर शारीरिक और मानसिक गति को चुनौती देते हैं। आमतौर पर ये हमारी उच्चारण क्षमता, भाषाई कौशल और शारीरिक प्रतिक्रिया को तेज करते हैं। हालांकि, इन्हें हम केवल मनोरंजन के रूप में देखते हैं, लेकिन इनके जीवन में रचनात्मक योगदान का महत्व अत्यधिक है। वे हमारे जीवन के कई पहलुओं में सहायक होते हैं जैसे कि भाषा कौशल, मानसिक सतर्कता, शारीरिक नियंत्रण, और सामाजिक संवाद की क्षमता।

1. उच्चारण और भाषाई कौशल में सुधार

टंग ट्विस्टर्स भाषा के उच्चारण, ध्वनि और शब्दों की स्पष्टता को बेहतर बनाने के लिए उपयोगी होते हैं। जब हम जल्दी-जल्दी टंग ट्विस्टर्स का अभ्यास करते हैं, तो हमारे मुँह के विभिन्न अंगों–जैसे कि जीभ, होंठ, तालू– का अधिकतम उपयोग होता है। इसके माध्यम से उच्चारण के विभिन्न पहलुओं में सुधार होता है, जैसे:

- ध्वनियों का सही उच्चारण: कई बार हम बिना ठीक से उच्चारण किए शब्दों को बोलते हैं। टंग ट्विस्टर्स के अभ्यास से हम मुश्किल ध्वनियों को सटीक रूप से उच्चारित करने में सक्षम होते हैं।
- रिदम और गति में संतुलन: टंग ट्विस्टर्स का अभ्यास करने से शब्दों को सही गति से बोलने में मदद मिलती है। यह हमें सही समय पर ध्वनियों और शब्दों का चयन करने की कला सिखाता है।

उदाहरण: जैसे हिंदी टंग ट्विस्टर्स "कच्चा पापड़, पक्का पापड़" या "चंदू के चाचा ने चंदू की चाची को चांदनी चौक में चांदी के चम्मच से चटनी चटाई" का उच्चारण हमें उच्चारण कौशल में दक्ष बनाता है।

2. मानसिक सतर्कता और मानसिक विकास

टंग ट्विस्टर्स केवल शारीरिक अभ्यास ही नहीं होते, बल्कि ये मानसिक व्यायाम भी होते हैं। जब हम इनका अभ्यास करते हैं, तो हमारे मस्तिष्क को विभिन्न ध्वनियों और शब्दों के बीच तेज़ी से प्रतिक्रिया देने की आवश्यकता होती है। यह हमें मानसिक रूप से सतर्क बनाता है, हमारी संज्ञानात्मक क्षमता को बढ़ाता है और निर्णय लेने की क्षमता में सुधार करता है।

- स्मृति और ध्यान: जब हम टंग ट्विस्टर्स को याद करके सही तरीके से बोलते हैं, तो हमें स्मृति और ध्यान पर काम करना पड़ता है। यह विशेष रूप से बच्चों के लिए सहायक हो सकता है क्योंकि यह उनके ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को बढ़ाता है।
- मनोरंजन और तनाव मुक्ति: टंग ट्विस्टर्स का अभ्यास मनोरंजन का एक साधन बन सकता है, जो तनाव को कम करता है और मानसिक शांति को बढ़ावा देता है।

3. शारीरिक नियंत्रण और मांसपेशियों का विकास

टंग ट्विस्टर्स का अभ्यास शारीरिक नियंत्रण और मांसपेशियों के विकास में सहायक होता है। जब हम लगातार उच्चारण करते हैं, तो हमारे मुँह की मांसपेशियाँ सक्रिय होती हैं। यह विशेष रूप से हमारे गले, जिब्हा, और होंठ की मांसपेशियों के लिए फायदेमंद है। यह न केवल हमें बेहतर उच्चारण में मदद करता है, बल्कि गाने, अभिनय, और सार्वजनिक बोलने के लिए भी मुँह और गले की मांसपेशियों का विकास करता है।

अशोक मेनारिया, टंग ट्विस्टर्स: हमारे जीवन में रचनात्मक योगदान, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 7-8*

4. सामाजिक संवाद और आत्मविश्वास में वृद्धि

टंग ट्विस्टर्स का अभ्यास सार्वजनिक बोलने के कौशल में सुधार करने में मदद करता है। जब हम अपनी भाषाई दक्षता में सुधार करते हैं, तो हमें सार्वजनिक रूप से बोलते समय आत्मविश्वास मिलता है। इसके अलावा, टंग ट्विस्टर्स को समूह में खेल के रूप में भी किया जा सकता है, जिससे सामाजिक संबंधों को प्रोत्साहन मिलता है। यह टीमवर्क, आपसी संवाद और सहभागिता को बढ़ावा देता है।

- समूह में संवाद: जब हम टंग ट्विस्टर्स का अभ्यास समूह में करते हैं, तो यह टीम वर्क को प्रोत्साहित करता है। इससे आपसी विश्वास और सहयोग का माहौल बनता है।
- आत्मविश्वास: जब हम अपने उच्चारण कौशल में सुधार करते हैं, तो हमें सार्वजनिक मंच पर बोलने में अधिक आत्मविश्वास महसूस होता है।

5. रचनात्मकता और अभिव्यक्ति का विकास

टंग ट्विस्टर्स हमारी रचनात्मकता को भी बढ़ावा देते हैं। जब हम इन वाक्यांशों के माध्यम से विभिन्न ध्वनियों और शब्दों का खेल करते हैं, तो यह हमारे रचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करता है। विशेष रूप से, अभिनेता और थिएटर कलाकार टंग ट्विस्टर्स का अभ्यास करके अपनी अभिव्यक्ति और संवाद कौशल में सुधार कर सकते हैं। इसके अलावा, बच्चों के लिए यह एक मजेदार तरीका हो सकता है, जिससे वे भाषा और संवाद के प्रति अपनी रुचि बढ़ा सकते हैं।

इससे यह कहा जा सकता है कि टंग ट्विस्टर्स, जो एक सरल और मजेदार अभ्यास प्रतीत होते हैं, हमारे जीवन में कई रचनात्मक योगदान देते हैं। वे न केवल हमारे उच्चारण को सुधारते हैं, बल्कि मानसिक सतर्कता, शारीरिक नियंत्रण, और आत्मविश्वास भी बढ़ाते हैं। ये भाषा के प्रति हमारी समझ को गहराई से प्रभावित करते हैं और हमारे सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन में सकारात्मक बदलाव लाते हैं। अतः टंग ट्विस्टर्स का अभ्यास हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और हम इसे एक प्रभावी और रचनात्मक शैक्षिक उपकरण के रूप में स्वीकार कर सकते हैं।

डॉ . भूपत राम, फ्रांसिस्को गोया की कृति - 3 मई 1808, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 9*

फ्रांसिस्को गोया की कृति - 3 मई 1808

डॉ . भूपत राम*

"The Third of May 1808" फ्रांसिस्को गोया द्वारा बनाई गई एक ऐतिहासिक और प्रभावशाली पेंटिंग है, जिसे 1814 में पूरा किया गया था। यह चित्र स्पेन में 2 मई 1808 को फ्रांसीसी सैनिकों द्वारा की गई आम नागरिकों की निर्मम हत्या की घटना को चित्रित करता है। यह आज भी स्पेन के म्यूज़ियो डेल प्राडो में सुरक्षित है।

चित्र की रूपरेखा

चित्र के मध्य में एक व्यक्ति दोनों हाथ उठाए खड़ा है, जैसे आत्मसमर्पण कर रहा हो, लेकिन उसका हाव-भाव उसे एक बलिदानी या मसीहा की तरह दर्शाता है। उसके चेहरे पर डर, बेबसी और संकल्प का मेल है। उसके चारों ओर अन्य लोग हैं जो गोली चलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। सामने बंदूक थामे सैनिक कतार में खड़े हैं जिनका चेहरा नहीं दिखता - जिससे वे अमानवीय प्रतीत होते हैं।

कलात्मक विश्लेषण

- प्रकाश-छाया का चमत्कारी प्रयोग: चित्र में जलती हुई लालटेन के प्रकाश में मुख्य पात्र सबसे अधिक उभरा हुआ है, जिससे उसकी पीड़ा पर दर्शकों की निगाह टिकती है।
- रंगों की गंभीरता: गहरे और मद्धम रंगों ने इस चित्र को और भी भावनात्मक बना दिया है। मुख्य रूप से काले, सफेद और रक्त जैसे लाल रंगों का प्रयोग पीड़ा और संघर्ष की भावना को प्रबल करता है।
- रचना में विरोधाभास: सैनिकों की कठोर एकरूपता बनाम नागरिकों की भंगिमा चित्र को एक प्रतीकात्मक गहराई देती है।

प्रतीक और संदेश

इस चित्र में मुख्य व्यक्ति की मुद्रा यीशु मसीह की क्रूस पर चढ़ने की याद दिलाती है - जो उसे एक बलिदानी प्रतीक बनाती है। यह चित्र सत्ता की क्रूरता और आमजन की विवशता का सजीव दस्तावेज़ बन गया है। सैनिकों के चेहरे छिपे हैं जिससे उनकी अमानवीयता को बल मिलता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

यह चित्र स्पेन और नेपोलियन की फ्रांस के बीच युद्ध के समय की है। गोया ने अपने चित्रों के माध्यम से न केवल क्रूरता का चित्रण किया, बल्कि लोगों की तकलीफ और प्रतिरोध को भी अमर बना दिया। यह चित्र उनकी दूसरी कृति "The Second of May 1808" से भी जुड़ा हुआ है।

"The Third of May 1808" एक मात्र कलाकृति नहीं है - यह विरोध, संवेदना और इतिहास का मौन साक्षी है। यह चित्र हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि युद्धों में सबसे बड़ा नुकसान आम इंसान को होता है। गोया ने इस रचना के माध्यम से युद्ध की भयावहता को सजीव किया है।

कुशाग्र जैन, जोस रुइज़ वाई ब्लास्को: पाब्लो पिकासो के पिता और कला शिक्षक- 3 मई 1808, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 10 - 11*

जोस रुइज़ वाई ब्लास्को: पाब्लो पिकासो के पिता और कला शिक्षक

कुशाग्र जैन*

जोस रुइज़ वाई ब्लास्को (José Ruiz y Blasco) का जन्म 12 अप्रैल 1838 को स्पेन के मालाग़ा शहर में हुआ था। वे एक चित्रकार, कला शिक्षक और पाब्लो पिकासो के पिता के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनकी कला में मुख्य रूप से कबूतरों, फूलों और अन्य प्रकृति चित्रों का चित्रण था।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

जोस रुइज़ ने अपनी प्रारंभिक कला शिक्षा मालाग़ा के स्थानीय हाई स्कूल से प्राप्त की थी, जहाँ उन्होंने चित्रकार जोस गार्सिया चिकानो से शिक्षा ली। इसके बाद, उन्होंने मालाग़ा की प्रांतीय कला विद्यालय में अध्ययन किया और वहाँ से कला में अपनी शिक्षा पूरी की। वे 1875 से 1890 तक Escuela Provincial de Bellas Artes San Telmo में कला शिक्षक के रूप में कार्यरत रहे। इस दौरान, उन्होंने कबूतरों और फूलों के चित्र बनाए और मालाग़ा के Museo Municipal में संरक्षक और पुनर्स्थापक के रूप में भी कार्य किया।

पाब्लो पिकासो पर प्रभाव

जोस रुइज़ ने पाब्लो पिकासो की कला प्रतिभा को जल्दी पहचान लिया था। उन्होंने पाब्लो को सात वर्ष की आयु में कला सिखाना शुरू किया था। पाब्लो ने आठ वर्ष की आयु में अपनी पहली पेंटिंग 'Le petit picador jaune' बनाई थी। 1892 में, उन्होंने पाब्लो को Coruña की Fine Arts School में दाखिला दिलवाया, जहाँ पाब्लो ने अपनी चित्रकला कौशल को विकसित किया। 13 वर्ष की आयु में, पाब्लो ने बार्सिलोना की Escuela de Bellas Artes में शिक्षा ली, जहाँ पाब्लो ने अपने पिता को कई चित्रों में मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया। जोस रुइज़ ने पाब्लो की कला में मार्गदर्शन किया और 'Science and Charity' जैसी कृतियों में उनकी सहायता की।

व्यक्तिगत जीवन

जोस रुइज़ ने 42 वर्ष की आयु में 17 वर्ष छोटी मारिया पिकासो से विवाह किया। उनके तीन बच्चे थे: पाब्लो, डोलोरेस (लोला) और कोंचिता (कोंचिता की 7 वर्ष की आयु में डिप्थीरिया से मृत्यु हो गई)। पाब्लो की कला में उनके पिता की छवि स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, और पाब्लो ने अपने चित्रों में अक्सर अपने पिता को चित्रित किया।

कला और कार्य

जोस रुइज़ की कला में मुख्य रूप से कबूतरों, फूलों और अन्य प्रकृति चित्रों का चित्रण था। उन्होंने अपनी कला के माध्यम से प्राकृतिक सौंदर्य और जीवन के सरल पहलुओं को उजागर किया। उनकी कृतियाँ आज भी कला प्रेमियों और शोधकर्ताओं द्वारा सराही जाती हैं।

मृत्यु और विरासत

जोस रुइज़ वाई ब्लास्को का निधन 3 मई 1913 को बार्सिलोना में हुआ। उनकी कला और पाब्लो पिकासो पर उनके प्रभाव ने कला जगत में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। पाब्लो ने अपने जीवन में अपने पिता को एक प्रेरणा स्रोत माना और उनकी छवि को अपने चित्रों में जीवित रखा। उनकी कला और उनके पाब्लो पिकासो पर प्रभाव को आज भी कला प्रेमियों और शोधकर्ताओं द्वारा सराहा जाता है।

कुशाग्र जैन, जोस रुइज़ वाई ब्लास्को: पाब्लो पिकासो के पिता और कला शिक्षक- 3 मई 1808, *कला समीक्षा* , *खंड* 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 10 - 11*

जोस रुइज़ वाई ब्लास्को न केवल एक प्रतिभाशाली चित्रकार और शिक्षक थे, बल्कि उन्होंने अपने पुत्र पाब्लो पिकासो की कला यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी शिक्षा, मार्गदर्शन और समर्थन ने पाब्लो को एक महान कलाकार बनने में मदद की। उनकी कला और उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा।

अशोक मेनारिया, एक जन्मतिथि, तीन कलात्मक शिखर: सल्वाडोर डाली, याकोव अगाम, और स्लावा इल्यायेव, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 12 - 18*

एक जन्मतिथि, तीन कलात्मक शिखर: सल्वाडोर डाली, याकोव अगाम, और स्लावा इल्यायेव

अशोक मेनारिया*

कला जगत एक ऐसा ब्रह्मांड है जहाँ कल्पनाएँ आकार लेती हैं, रंग बोलते हैं और भावनाएँ मूर्त रूप धारण करती हैं। इस ब्रह्मांड के अनगिनत सितारों में से कुछ ऐसे भी हैं जिनका जन्मदिवस एक ही तारीख को पड़ता है, जो कला प्रेमियों के लिए एक सुखद संयोग प्रस्तुत करता है। 11 मई एक ऐसी ही विशेष तिथि है, जिस दिन तीन भिन्न शैलियों और पीढ़ियों के कलाकारों ने जन्म लिया: अतियथार्थवाद के जादूगर सल्वाडोर डाली, गतिज कला के प्रणेता याकोव अगाम और समकालीन पैलेट नाइफ कलाकार स्लावा इल्यायेव।

सल्वाडोर डाली - अतियथार्थवाद का पर्याय

(जन्म: 11 मई, 1904; मृत्यु: 23 जनवरी, 1989)

सल्वाडोर डोमेनेक फेलिप डाली आई डोमेनेक, जिन्हें दुनिया सल्वाडोर डाली के नाम से जानती है, बीसवीं सदी के सबसे प्रभावशाली और विवादास्पद कलाकारों में से एक थे। उनका जन्म 11 मई, 1904 को स्पेन के फिगुएरेस, कैटेलोनिया में हुआ था। डाली की कलाकृतियाँ उनके विलक्षण व्यक्तित्व, स्वप्निल कल्पनाओं और अचेतन मन की गहराइयों का प्रतिबिंब हैं। उन्हें अतियथार्थवाद (Surrealism) आंदोलन के प्रमुख स्तंभों में गिना जाता है।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा:

डाली का बचपन विलक्षणता और कल्पनाओं से भरा हुआ था। उनके माता-पिता ने उनके बड़े भाई, जिनका नाम भी सल्वाडोर था और जिनकी मृत्यु डाली के जन्म से नौ महीने पहले हो गई थी, की याद में उन्हें पाला। इस घटना ने डाली के मन पर गहरा प्रभाव डाला और वे स्वयं को अपने मृत भाई का पुनर्जन्म मानने लगे। यह भावना उनके कई कार्यों में परिलक्षित होती है।

डाली ने अपनी प्रारंभिक कला शिक्षा फिगुएरेस के म्युनिसिपल ड्राइंग स्कूल में प्राप्त की। 1922 में, वे मैड्रिड के सैन फर्नांडो रॉयल अकादमी ऑफ फाइन आर्ट्स में अध्ययन करने गए, जहाँ उनकी मुलाकात कवि फेडेरिको गार्सिया लोर्का और फिल्म निर्माता लुइस बुनुएल जैसे भविष्य के दिग्गजों से हुई। अकादमी में डाली ने विभिन्न कला शैलियों, जैसे कि प्रभाववाद, बिंदुवाद और क्यूबिज्म के साथ प्रयोग किए। हालाँकि, उनकी विद्रोही प्रकृति और नियमों को चुनौती देने की प्रवृत्ति के कारण उन्हें अकादमी से निष्कासित कर दिया गया।

अतियथार्थवाद की ओर यात्रा:

1920 के दशक के अंत में डाली पेरिस गए, जो उस समय कला और संस्कृति का केंद्र था। वहाँ वे अतियथार्थवादी आंदोलन के संस्थापक आंद्रे ब्रेटन और अन्य प्रमुख अतियथार्थवादी कलाकारों जैसे रेने मैग्रिट, मैक्स अर्न्स्ट और जोन मिरो के संपर्क में आए। सिगमंड फ्रायड के मनोविश्लेषण के सिद्धांतों से गहराई से प्रभावित होकर, डाली ने अपनी कला में सपनों, अचेतन इच्छाओं और तर्कहीनता को चित्रित करना शुरू किया।

अशोक मेनारिया, एक जन्मतिथि, तीन कलात्मक शिखर: सल्वाडोर डाली, याकोव अगाम, और स्लावा इत्यायेव, *कला समीक्षा* , *खंड* 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 12 - 18*

डाली ने अपनी अनूठी "पैरानोइक-क्रिटिकल मेथड" (Paranoiac-Critical Method) विकसित की, जिसके माध्यम से वे अपने भ्रम और अचेतन विचारों को कलाकृतियों में रूपांतरित करते थे। इस पद्धति में जानबूझकर भ्रम की स्थिति उत्पन्न करना और फिर उन छवियों और विचारों को तर्कसंगत रूप से व्यवस्थित करना शामिल था।

प्रमुख कलाकृतियाँ और उनकी विशेषताएँ:

डाली की कलाकृतियाँ उनकी तकनीकी दक्षता, सूक्ष्म विवरणों और प्रतीकात्मकता के लिए जानी जाती हैं। उनकी कुछ सबसे प्रसिद्ध कृतियों में शामिल हैं:

- "द पर्सिस्टेंस ऑफ़ मेमोरी" (The Persistence of Memory, 1931): यह शायद डाली की सबसे प्रतिष्ठित कृति है, जिसमें पिघलती हुई घड़ियाँ एक उजाड़ परिदृश्य में लटकी हुई दिखाई देती हैं। यह समय की सापेक्षता और स्मृति की तरलता का प्रतीक है।
- "स्वैन्स रिफ्लेक्टिंग एलिफेंट्स" (Swans Reflecting Elephants, 1937): इस पेंटिंग में झील में तैरते हुए हंसों का प्रतिबिंब हाथियों जैसा दिखता है, जो डाली की भ्रम और दोहरी छवियों के प्रति आकर्षण को दर्शाता है।
- "द टेम्पटेशन ऑफ़ सेंट एंथोनी" (The Temptation of St. Anthony, 1946): इस कृति में संत एंथोनी को विभिन्न प्रलोभनों का सामना करते हुए दिखाया गया है, जो पतले, लंबे पैरों वाले घोड़ों और हाथियों के रूप में चित्रित किए गए हैं।
- "क्राइस्ट ऑफ़ सेंट जॉन ऑफ़ द क्रॉस" (Christ of Saint John of the Cross, 1951): यह पेंटिंग ईसा मसीह को एक अद्वितीय कोण से, ऊपर से नीचे की ओर क्रॉस पर लटका हुआ दिखाती है, जो दर्शकों को एक अलग दृष्टिकोण प्रदान करती है।
- "द डिसइंटिग्रेशन ऑफ़ द पर्सिस्टेंस ऑफ़ मेमोरी" (The Disintegration of the Persistence of Memory, 1952-54): यह उनकी पहले की प्रसिद्ध कृति का एक पुनर्मूल्यांकन है, जिसमें परमाणु युग के प्रभाव और वैज्ञानिक खोजों के प्रति उनकी रुचि झलकती है।

डाली की कला में आवर्ती रूपांकनों में पिघलती घड़ियाँ, चींटियाँ (जो क्षय और मृत्यु का प्रतीक हैं), अंडे (जन्म और पवित्रता का प्रतीक), बैसाखी (समर्थन और कमजोरी का प्रतीक) और उनकी पत्नी गाला (जो उनकी प्रेरणा और म्यूज थीं) शामिल हैं।

गाला डाली: प्रेरणा और शक्ति:

ऐलेना इवानोव्ना डायकोनोवा, जिन्हें गाला के नाम से जाना जाता है, डाली के जीवन और कला में एक केंद्रीय भूमिका निभाती थीं। वे न केवल उनकी पत्नी और म्यूज थीं, बल्कि उनकी मैनेजर और सबसे बड़ी समर्थक भी थीं। डाली ने अक्सर उन्हें अपनी कलाकृतियों में चित्रित किया और उन्हें अपने जीवन का आधार माना।

विवाद और विरासत:

डाली एक असाधारण और विवादास्पद व्यक्तित्व के धनी थे। उनके सार्वजनिक व्यवहार, उनकी मूंछें और उनके चौंकाने वाले बयान अक्सर उन्हें सुर्खियों में रखते थे। उनके राजनीतिक विचारों, विशेष रूप से स्पेनिश गृहयुद्ध और फ्रैंको शासन के प्रति उनके कथित समर्थन ने भी विवादों को जन्म दिया।

इन विवादों के बावजूद, कला जगत पर डाली का प्रभाव निर्विवाद है। उन्होंने अतियथार्थवाद को लोकप्रिय बनाया और इसे दृश्य कलाओं से परे फैशन, डिजाइन, फिल्म और विज्ञापन तक विस्तारित किया। उनकी

अशोक मेनारिया, एक जन्मतिथि, तीन कलात्मक शिखर: सल्वाडोर डाली, याकोव अगाम, और स्लावा इत्यायेव, कला समीक्षा , *खंड* 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 12 - 18*

तकनीकी कुशलता, मौलिकता और अचेतन मन की खोज ने कलाकारों की कई पीढ़ियों को प्रेरित किया है। फिगुएरेस में स्थित डाली थिएटर-म्यूजियम, जिसे उन्होंने स्वयं डिजाइन किया था, उनकी कलात्मक दृष्टि और विरासत का एक प्रमाण है।

डाली ने न केवल पेंटिंग में बल्कि मूर्तिकला, फिल्म निर्माण (लुइस बुनुएल के साथ "अन चिएन अंडालू" और "ल'एज डी'ओर"), लेखन और डिजाइन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका जीवन और कार्य आज भी कला इतिहासकारों, आलोचकों और कला प्रेमियों के लिए अध्ययन और प्रेरणा का विषय बना हुआ है।

याकोव अगाम - गतिज और दृष्टिभ्रम कला के अग्रदूत

(जन्म: 11 मई, 1928)

याकोव अगाम (जन्म याकोव गिप्स्टीन) इजरायल के एक विश्व प्रसिद्ध कलाकार हैं, जिन्हें गतिज कला (Kinetic Art) और दृष्टिभ्रम कला (Op Art) के क्षेत्र में उनके अग्रणी योगदान के लिए जाना जाता है। उनका जन्म 11 मई, 1928 को तत्कालीन ब्रिटिश फिलिस्तीन के रिशोन लेज़ियन में एक रूढ़िवादी यहूदी परिवार में हुआ था। अगाम की कलाकृतियाँ दर्शकों को सक्रिय रूप से भाग लेने और विभिन्न दृष्टिकोणों से कला का अनुभव करने के लिए आमंत्रित करती हैं।

प्रारंभिक जीवन और कलात्मक प्रेरणाएँ:

अगाम के पिता, एक रब्बी और कबालिस्ट थे, जिन्होंने उन्हें यहूदी धर्म की रहस्यमय परंपराओं और आध्यात्मिक विचारों से परिचित कराया। यह प्रारंभिक धार्मिक शिक्षा अगाम की कलात्मक दृष्टि पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है, विशेष रूप से समय, परिवर्तन और वास्तविकता की बहुस्तरीय प्रकृति की उनकी समझ पर।

अगाम ने अपनी कला शिक्षा यरूशलेम में बेज़लेल एकेडमी ऑफ़ आर्ट एंड डिज़ाइन में शुरू की। बाद में वे स्विट्जरलैंड गए, जहाँ उन्होंने ज्यूरिख में जोहान्स इटेन के मार्गदर्शन में अध्ययन किया, जो बॉहॉस स्कूल के एक प्रमुख व्यक्ति थे। इटेन के रंग सिद्धांत और रचनात्मकता के प्रति समग्र दृष्टिकोण ने अगाम की कलात्मक शैली के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1951 में, अगाम पेरिस चले गए, जो उस समय कलात्मक नवाचार का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। वहाँ वे अतियथार्थवादी कलाकारों और गतिज कला के अन्य अग्रदूतों के संपर्क में आए।

गतिज और दृष्टिभ्रम कला:

अगाम की कला की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी गतिशीलता और परिवर्तनशीलता है। वे ऐसी कलाकृतियाँ बनाते हैं जो दर्शक की स्थिति या दृष्टिकोण के साथ बदलती रहती हैं। उनकी कला स्थिर नहीं है, बल्कि यह एक गतिशील अनुभव प्रदान करती है।

उन्होंने "अगामोग्राफ" (Agamograph) नामक एक अनूठी तकनीक विकसित की, जिसमें एक ही सतह पर दो या दो से अधिक अलग-अलग छवियों को इस तरह से व्यवस्थित किया जाता है कि दर्शक जब चित्र के सामने से गुजरता है तो उसे अलग-अलग छवियाँ दिखाई देती हैं। यह त्रि-आयामी प्रभाव दर्शक को कलाकृति के साथ एक सक्रिय संवाद स्थापित करने के लिए प्रेरित करता है।

अशोक मेनारिया, एक जन्मतिथि, तीन कलात्मक शिखर: सल्वाडोर डाली, याकोव अगाम, और स्लावा इल्यायेव, *कला समीक्षा* , *खंड* 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 12 - 18*

अगाम की कलाकृतियों में अक्सर ज्यामितीय आकृतियों, चमकीले रंगों और प्रकाश का प्रयोग होता है। वे मानते हैं कि कला को जीवन की तरह ही निरंतर परिवर्तनशील और बहुआयामी होना चाहिए। उनकी रचनाएँ समय और स्थान की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देती हैं।

प्रमुख कार्य और प्रदर्शनियाँ:

अगाम ने अपने लंबे और सफल करियर में कई महत्वपूर्ण कलाकृतियाँ बनाई हैं, जिनमें पेंटिंग, मूर्तियां, स्थापनाएं और वास्तुशिल्प डिजाइन शामिल हैं। उनकी कुछ उल्लेखनीय कृतियाँ हैं:

- "डबल मेटामॉर्फोसिस II" (Double Metamorphosis II, 1964): यह एक प्रसिद्ध अगामोग्राफ है जो दर्शक के हिलने-डुलने पर अलग-अलग पैटर्न और रंग दिखाता है।
- "सैल्यूट टू द वर्ल्ड" (Salute to the World, 1970 के दशक): यह एक बड़ी बहुरंगी गतिज मूर्तिकला है जो विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शित की गई है।
- "फायर एंड वॉटर फाउंटेन" (Fire and Water Fountain, तेल अवीव, 1986): डिज़ेंगॉफ़ स्क्वायर, तेल अवीव में स्थित यह एक प्रसिद्ध सार्वजनिक कलाकृति है, जिसमें संगीत, पानी और आग के गतिशील प्रदर्शन शामिल हैं।
- "अगाम रूम" (Agam Room, सेंटर पोम्पीडौ, पेरिस): यह एक पूरी तरह से अगाम द्वारा डिजाइन किया गया कमरा है, जो दर्शकों को एक immersive और गतिशील कला अनुभव प्रदान करता है।

अगाम की कलाकृतियाँ दुनिया भर के प्रमुख संग्रहालयों और दीर्घाओं में प्रदर्शित की गई हैं, जिनमें न्यूयॉर्क में म्यूजियम ऑफ़ मॉडर्न आर्ट (MoMA), पेरिस में सेंटर पोम्पीडौ और यरूशलेम में इज़राइल संग्रहालय शामिल हैं। उन्हें अपनी कलात्मक उपलब्धियों के लिए कई प्रतिष्ठित पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं।

दार्शनिक आधार और यहूदी प्रभाव:

अगाम की कला उनके गहरे दार्शनिक और आध्यात्मिक विश्वासों से ओतप्रोत है। यहूदी धर्म में अदृश्य ईश्वर की अवधारणा और वास्तविकता की निरंतर बदलती प्रकृति के विचार उनकी कला में परिलक्षित होते हैं। वे मानते हैं कि कला को केवल एक वस्तु के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि एक अनुभव के रूप में महसूस किया जाना चाहिए जो समय और गति के साथ विकसित होता है।

उनकी कला का उद्देश्य दर्शकों को वास्तविकता की बहुलता और उनके अपने बोध की सक्रिय भूमिका के बारे में जागरूक करना है। वे दर्शकों को केवल निष्क्रिय पर्यवेक्षक नहीं, बल्कि कलाकृति के सह-निर्माता बनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

विरासत और प्रभाव:

याकोव अगाम को गतिज कला और दृष्टिभ्रम कला के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कलाकार माना जाता है। उन्होंने कला की पारंपरिक सीमाओं को चुनौती दी और कला और दर्शक के बीच एक नया गतिशील संबंध स्थापित किया। उनकी तकनीकों और विचारों ने दृश्य कला, डिजाइन और वास्तुकला के क्षेत्र में कई कलाकारों और डिजाइनरों को प्रेरित किया है।

अशोक मेनारिया, एक जन्मतिथि, तीन कलात्मक शिखर: सल्वाडोर डाली, याकोव अगाम, और स्लावा इल्यायेव, *कला समीक्षा* , *खंड* 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 12 - 18*

90 वर्ष से अधिक की आयु में भी, अगाम कला जगत में सक्रिय हैं और उनकी रचनाएँ आज भी दर्शकों को विस्मित और प्रेरित करती हैं। उनका काम हमें यह याद दिलाता है कि वास्तविकता स्थिर नहीं है और कला हमें दुनिया को नए और अप्रत्याशित तरीकों से देखने में मदद कर सकती है।

स्लावा इल्यायेव - पैलेट नाइफ का समकालीन जादूगर

(जन्म: 11 मई, 1970)

स्लावा इल्यायेव एक समकालीन इजरायली कलाकार हैं, जो अपनी जीवंत रंगों और बनावट वाली पैलेट नाइफ तकनीक के लिए जाने जाते हैं। उनका जन्म 11 मई, 1970 को बाकू, अज़रबैजान (तत्कालीन सोवियत संघ का हिस्सा) में हुआ था। इल्यायेव की कलाकृतियाँ, विशेष रूप से उनके शरद ऋतु के परिदृश्य, प्रकाश, रंग और बनावट का एक अनूठा संयोजन प्रस्तुत करती हैं, जो दर्शकों को एक सकारात्मक और उत्थानकारी अनुभव प्रदान करती हैं।

प्रारंभिक जीवन और कलात्मक विकास:

इल्यायेव ने अपने प्रारंभिक वर्षों में ही कला के प्रति रुचि विकसित कर ली थी। उन्होंने बाकू में ललित कला अकादमी में अध्ययन किया, जहाँ उन्होंने अपनी तकनीकी क्षमताओं को निखारा और विभिन्न कला शैलियों का पता लगाया। 1995 में, वे इज़राइल चले गए, जहाँ उन्होंने अपनी कलात्मक यात्रा को जारी रखा।

इज़राइल में, इल्यायेव ने अवनी इंस्टीट्यूट ऑफ़ आर्ट एंड डिज़ाइन में अध्ययन किया, जो देश के सबसे प्रतिष्ठित कला संस्थानों में से एक है। यहाँ उन्होंने अपनी विशिष्ट शैली विकसित करना शुरू किया, जिसमें पैलेट नाइफ का प्रमुख उपयोग और रंगों का बोल्ड अनुप्रयोग शामिल था।

पैलेट नाइफ तकनीक और शैली:

इल्यायेव की कला की पहचान उनकी पैलेट नाइफ तकनीक है। ब्रश के बजाय, वे रंगों को कैनवास पर लगाने और मिलाने के लिए विभिन्न आकारों और आकृतियों के पैलेट नाइफ का उपयोग करते हैं। यह तकनीक उन्हें मोटी, बनावट वाली सतह बनाने की अनुमति देती है जो प्रकाश को एक विशेष तरीके से पकड़ती और प्रतिबिंबित करती है।

उनकी शैली को उत्तर-प्रभाववाद (Post-Impressionism) से प्रभावित माना जा सकता है, विशेष रूप से विन्सेंट वैन गॉग जैसे कलाकारों के काम से, जिनकी मोटी तूलिका और जीवंत रंगों का उपयोग इल्यायेव की शैली में भी झलकता है। हालाँकि, इल्यायेव की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो उनके रंगों के चयन और उनकी रचनाओं की गतिशीलता में देखी जा सकती है।

उनके चित्रों में अक्सर शहरी दृश्य, परिदृश्य और विशेष रूप से शरद ऋतु के दृश्य शामिल होते हैं। वे शरद ऋतु के रंगों - लाल, नारंगी, पीले और भूरे रंग - को कुशलतापूर्वक चित्रित करते हैं, जिससे उनके चित्र जीवंत और ऊर्जावान लगते हैं। प्रकाश उनकी कलाकृतियों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है; वे अक्सर गीली सड़कों पर रोशनी के प्रतिबिंब या पेड़ों के माध्यम से छनती हुई धूप को चित्रित करते हैं।

विषय वस्तु और प्रेरणा:

अशोक मेनारिया, एक जन्मतिथि, तीन कलात्मक शिखर: सल्वाडोर डाली, याकोव अगाम, और स्लावा इल्यायेव, कला समीक्षा , *खंड* 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 12 - 18*

इल्यायेव की कलाकृतियाँ अक्सर उनके आसपास की दुनिया से प्रेरित होती हैं। वे शहरी जीवन की हलचल, प्रकृति की सुंदरता और बदलते मौसमों के मूड को अपने कैनवास पर उतारते हैं। उनके शरद ऋतु के परिदृश्य विशेष रूप से लोकप्रिय हैं, जो इस मौसम की सुंदरता और उदासी दोनों को दर्शाते हैं।

उनकी रचनाएँ अक्सर एक सकारात्मक और आशावादी भावना व्यक्त करती हैं। चमकीले रंगों और गतिशील बनावटों का उपयोग दर्शकों में खुशी और विस्मय की भावना पैदा करता है। वे अपनी कला के माध्यम से दुनिया की सुंदरता और जीवन शक्ति को साझा करना चाहते हैं।

प्रमुख प्रदर्शनियाँ और मान्यता:

स्लावा इल्यायेव ने इज़राइल और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई एकल और समूह प्रदर्शनियों में भाग लिया है। उनकी कलाकृतियाँ निजी संग्रहकर्ताओं और कला प्रेमियों के बीच काफी लोकप्रिय हैं। उनकी अनूठी शैली और तकनीकी कौशल ने उन्हें समकालीन कला जगत में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है।

उनकी कुछ प्रमुख विशेषताओं में शामिल हैं:

- बनावट का समृद्ध उपयोग: पैलेट नाइफ के कारण उनके चित्रों में एक त्रि-आयामी गुणवत्ता होती है।
- जीवंत रंग पैलेट: वे大胆तापूर्वक रंगों का उपयोग करते हैं, जिससे उनकी रचनाएँ ऊर्जावान और आकर्षक बनती हैं।
- प्रकाश का कुशल चित्रण: वे प्रकाश और छाया के खेल को कुशलता से पकड़ते हैं, जिससे उनके चित्रों में गहराई और यथार्थता आती है।
- सकारात्मक और उत्थानकारी विषय: उनकी कला अक्सर खुशी और आशा की भावना व्यक्त करती है।

समकालीन कला में स्थान:

स्लावा इल्यायेव समकालीन परिदृश्य चित्रकला में एक महत्वपूर्ण आवाज हैं। उनकी पैलेट नाइफ तकनीक का अनूठा उपयोग और रंगों के प्रति उनका जुनून उन्हें अन्य कलाकारों से अलग करता है। वे पारंपरिक विषयों को एक नई और समकालीन दृष्टि से प्रस्तुत करते हैं।

उनकी कला उन लोगों को आकर्षित करती है जो सुंदरता, रंग और बनावट की सराहना करते हैं। उनके चित्र न केवल देखने में आकर्षक होते हैं, बल्कि वे दर्शकों को एक भावनात्मक अनुभव भी प्रदान करते हैं। एक ऐसे युग में जहाँ कला अक्सर वैचारिक और अमूर्त होती है, इल्यायेव की रचनाएँ दृश्य आनंद और भावनात्मक जुड़ाव का एक ताज़ा झोंका प्रदान करती हैं।

निष्कर्ष

सल्वाडोर डाली, याकोव अगाम और स्लावा इल्यायेव - ये तीनों कलाकार, जिनका जन्म 11 मई को हुआ, कला जगत के तीन भिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

सल्वाडोर डाली ने अतियथार्थवाद के माध्यम से अचेतन मन की गहराइयों और सपनों की दुनिया को खंगाला। उनकी विलक्षण कल्पना और तकनीकी महारत ने उन्हें 20वीं सदी के सबसे पहचानने योग्य और प्रभावशाली

अशोक मेनारिया, एक जन्मतिथि, तीन कलात्मक शिखर: सल्वाडोर डाली, याकोव अगाम, और स्लावा इल्यायेव, *कला समीक्षा* , *खंड* 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 12 - 18*

कलाकारों में से एक बना दिया। उनकी कला आज भी हमें वास्तविकता की पारंपरिक सीमाओं पर सवाल उठाने और कल्पना की शक्ति को अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

याकोव अगाम ने गतिज और दृष्टिभ्रम कला के माध्यम से कला और दर्शक के बीच के संबंध को फिर से परिभाषित किया। उनकी परिवर्तनशील और सहभागी कलाकृतियाँ हमें यह सिखाती हैं कि कला एक स्थिर वस्तु नहीं, बल्कि एक गतिशील अनुभव हो सकती है। उन्होंने समय, स्थान और बोध की हमारी धारणाओं को चुनौती दी और कला को एक बहुआयामी संवाद के रूप में प्रस्तुत किया।

स्लावा इल्यायेव समकालीन कला जगत में अपनी जीवंत पैलेट नाइफ तकनीक और प्रकाश तथा रंग के कुशल चित्रण के साथ एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनके चित्र, विशेष रूप से शरद ऋतु के परिदृश्य, प्रकृति की सुंदरता और जीवन की सकारात्मक ऊर्जा का जश्न मनाते हैं। वे हमें याद दिलाते हैं कि कला आनंद और भावनात्मक उत्थान का एक शक्तिशाली स्रोत हो सकती है।

ये तीनों कलाकार, अपनी भिन्न शैलियों, दर्शनों और पीढ़ियों के बावजूद, कला की परिवर्तनकारी शक्ति में एक साझा विश्वास रखते हैं। उन्होंने अपनी अनूठी दृष्टि और रचनात्मकता के माध्यम से दुनिया को देखने के हमारे तरीकों को समृद्ध किया है। 11 मई को जन्मे इन कलात्मक दिग्गजों का काम आज भी दुनिया भर के कला प्रेमियों को प्रेरित और मंत्रमुग्ध करता है, और यह साबित करता है कि कला की भाषा सार्वभौमिक है और इसकी अपील कालातीत है। उनकी विरासत हमें यह दर्शाती है कि कला न केवल सौंदर्य का विषय है, बल्कि यह मानवीय अनुभव, कल्पना और नवाचार का एक अनिवार्य हिस्सा भी है।

अशोक मेनारिया, कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 19- *26*

कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस

डॉ. भूपत राम

*

कला जगत में कुछ तिथियाँ अनजाने ही कई कलात्मक जीवन यात्राओं को एक सूत्र में पिरो देती हैं। 11 मई एक ऐसी ही तिथि है, जो न केवल सृजन का उत्सव मनाती है बल्कि कला की दुनिया में महत्वपूर्ण योगदान देने वाली दो प्रतिभाओं की पुण्यतिथि के रूप में भी अंकित है। यह दिन हमें दो भिन्न पीढ़ियों और कलात्मक शैलियों का प्रतिनिधित्व करने वाले दो मूर्तिकारों - जॉर्ज मैटलैंड स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस - की याद दिलाता है। स्टेनली, जिनकी कला ने हॉलीवुड के सुनहरे युग को परिभाषित करने में मदद की और जिनकी प्रतिष्ठित ऑस्कर प्रतिमा आज भी वैश्विक सिनेमाई उत्कृष्टता का प्रतीक है, का निधन 11 मई, 1970 को हुआ। वहीं, दूसरी ओर, रॉबर्ट थॉमस, एक ऐसे मूर्तिकार जिन्होंने अपनी विशिष्ट शैली और सार्वजनिक कलाकृतियों के माध्यम से समकालीन मूर्तिकला में अपनी पहचान बनाई, ने 11 मई, 1999 को इस दुनिया को अलविदा कहा।

भले ही इन दोनों कलाकारों के जीवन और कार्यक्षेत्र भौगोलिक और शैलीगत रूप से भिन्न रहे हों, कला के प्रति उनका समर्पण और उनकी सृजनात्मकता उन्हें एक अदृश्य धागे से जोड़ती है। स्टेनली की कृतियाँ जहाँ अमेरिकी स्वप्न और ग्लैमर का प्रतिनिधित्व करती हैं, वहीं थॉमस की कलाकृतियाँ मानवीय भावनाओं और स्थानीय संस्कृति की गहराइयों को टटोलती प्रतीत होती हैं। 11 मई का दिन हमें इन दो मूर्तिकारों द्वारा छोड़ी गई समृद्ध कलात्मक विरासत पर विचार करने का अवसर प्रदान करता है।

यह आलेख इन दोनों मूर्धन्य कलाकारों के जीवन, उनकी कलात्मक यात्रा, प्रमुख कृतियों, शैलीगत विशेषताओं और कला जगत पर उनके अमिट प्रभाव का विस्तृत अन्वेषण करेगा। हम जॉर्ज स्टेनली की हॉलीवुड बाउल की भव्य "म्यूज़" मूर्तियों से लेकर ऑस्कर की सुनहरी चमक तक की कहानी और रॉबर्ट थॉमस के उन कार्यों की पड़ताल करेंगे जिन्होंने उन्हें अपने समय का एक महत्वपूर्ण मूर्तिकार बनाया।

जॉर्ज मैटलैंड स्टेनली - हॉलीवुड की कलात्मक धरोहर और ऑस्कर का अमर शिल्पी

जॉर्ज मैटलैंड स्टेनली (George Maitland Stanley) का नाम अमेरिकी मूर्तिकला, विशेष रूप से सार्वजनिक कला और प्रतिष्ठित डिज़ाइन के क्षेत्र में, आदर के साथ लिया जाता है। उनका जन्म 26 अप्रैल, 1903 को अमेरिका के लुइसियाना राज्य के एक छोटे से शहर इओटा में हुआ था। हालांकि, उनकी कलात्मक कर्मभूमि कैलिफ़ोर्निया बनी, जहाँ उन्होंने अपनी सबसे प्रसिद्ध कृतियों को आकार दिया, जिनमें हॉलीवुड बाउल की प्रतिष्ठित "म्यूज़" प्रतिमाएँ और विश्व प्रसिद्ध ऑस्कर अवॉर्ड की प्रतिमा शामिल हैं। 11 मई, 1970 को उनके निधन ने कला जगत में एक शून्य छोड़ दिया, लेकिन उनकी कृतियाँ आज भी उनकी प्रतिभा का बखान करती हैं।

प्रारंभिक जीवन, शिक्षा और कलात्मक प्रेरणा

जॉर्ज स्टेनली का बचपन ग्रामीण लुइसियाना में बीता, लेकिन कला के प्रति उनका रुझान उन्हें कम उम्र में ही कैलिफ़ोर्निया ले आया। उन्होंने अपनी औपचारिक कला शिक्षा लॉस एंजिल्स के ओटिस आर्ट इंस्टीट्यूट (अब ओटिस कॉलेज ऑफ़ आर्ट एंड डिज़ाइन) में प्राप्त की, जो उस समय पश्चिमी संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रमुख

अशोक मेनारिया, कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 19- *26*

कला संस्थानों में से एक था। यहाँ उन्होंने मूर्तिकला की बारीकियों को सीखा और विभिन्न माध्यमों के साथ प्रयोग किए। उनके शिक्षकों ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और उन्हें अपनी शैली विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

स्टेनली की प्रारंभिक कला पर 20वीं सदी की शुरुआत की प्रमुख कलात्मक धाराओं, विशेष रूप से आर्ट डेको (Art Deco) और शास्त्रीय यथार्थवाद (Classical Realism) का प्रभाव देखा जा सकता है। आर्ट डेको की विशेषताएँ, जैसे कि ज्यामितीय रूप, सुव्यवस्थित रेखाएँ और आधुनिकता का भाव, उनके कुछ कार्यों में स्पष्ट रूप से झलकती हैं। वहीं, मानव शरीर रचना और शास्त्रीय सौंदर्य के प्रति उनका सम्मान उनके यथार्थवादी चित्रण में दिखाई देता है।

अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, स्टेनली ने एक स्वतंत्र मूर्तिकार के रूप में अपना करियर शुरू किया। वे जल्द ही दक्षिणी कैलिफ़ोर्निया के कला परिदृश्य में एक सक्रिय सदस्य बन गए। उन्होंने विभिन्न सार्वजनिक और निजी परियोजनाओं पर काम किया, जिससे उन्हें अपनी कला को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाने का अवसर मिला। उनकी प्रतिभा न केवल बड़ी स्मारकीय मूर्तियों को गढ़ने में थी, बल्कि वे छोटी, अधिक अंतरंग कृतियों को भी उतनी ही कुशलता से बनाते थे। इस दौर में उन्होंने कई पोर्ट्रेट बस्ट और सजावटी कलाकृतियाँ भी बनाईं, जिनसे उनकी तकनीकी दक्षता और कलात्मक दृष्टि का पता चलता है।

कलात्मक यात्रा और शैलीगत विकास

जॉर्ज स्टेनली की कलात्मक यात्रा उनके समय के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों से भी प्रभावित हुई। 1920 और 1930 का दशक, जिसे "रोरिंग ट्वेंटीज़" और महामंदी के दौर के रूप में जाना जाता है, कला और डिजाइन में नए प्रयोगों का समय था। स्टेनली ने इन प्रवृत्तियों को आत्मसात किया, लेकिन अपनी एक विशिष्ट शैली भी बनाए रखी।

उनकी शैली की प्रमुख विशेषताओं में शामिल हैं:

1. शास्त्रीयता और आधुनिकता का संतुलन: स्टेनली अपनी मूर्तियों में शास्त्रीय सौंदर्य और आनुपातिकता को महत्व देते थे, लेकिन साथ ही वे आधुनिक डिजाइन तत्वों को भी शामिल करने से नहीं हिचकिचाते थे। यह संतुलन उनकी कृतियों को एक कालातीत अपील प्रदान करता है।

2. मानव रूप का कुशल चित्रण: वे मानव शरीर की संरचना और गति को सटीकता और संवेदनशीलता के साथ पकड़ने में माहिर थे। उनकी "म्यूज़" प्रतिमाएँ इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जहाँ आकृतियों की मुद्राएँ और भाव जीवंत लगते हैं।

3. माध्यम पर महारत: स्टेनली ने कांस्य, पत्थर और अन्य सामग्रियों के साथ काम किया। वे प्रत्येक माध्यम की विशेषताओं को समझते थे और उनका प्रभावी ढंग से उपयोग करते थे ताकि उनकी कलात्मक दृष्टि को साकार किया जा सके।

4. प्रतीकात्मकता: उनकी कई कृतियों में गहरे प्रतीकात्मक अर्थ निहित हैं। ऑस्कर प्रतिमा, उदाहरण के लिए, सिनेमाई उपलब्धि और उत्कृष्टता का प्रतीक बन गई है।

1930 के दशक के दौरान, स्टेनली ने वर्क्स प्रोग्रेस एडमिनिस्ट्रेशन (WPA) के तहत कई सार्वजनिक कला परियोजनाओं पर भी काम किया। महामंदी के दौरान कलाकारों को रोजगार प्रदान करने के लिए शुरू की गई इस पहल ने उन्हें बड़े पैमाने पर काम करने और अपनी कला को आम जनता के लिए सुलभ बनाने का अवसर

अशोक मेनारिया, कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 19- *26*

दिया। इन परियोजनाओं ने न केवल उनकी प्रतिष्ठा को बढ़ाया बल्कि उन्हें एक सार्वजनिक कलाकार के रूप में भी स्थापित किया।

प्रमुख कृतियाँ

जॉर्ज स्टेनली की कलात्मक विरासत में कई महत्वपूर्ण कृतियाँ शामिल हैं, लेकिन कुछ ऐसी हैं जिन्होंने उन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाई:

• "म्यूज़ ऑफ़ म्यूज़िक, डांस, ड्रामा" (Muse of Music, Dance, Drama) – हॉलीवुड बाउल (1940): लॉस एंजिल्स के प्रतिष्ठित हॉलीवुड बाउल के प्रवेश द्वार पर स्थित यह फव्वारा और मूर्ति समूह स्टेनली की सबसे महत्वाकांक्षी और प्रशंसित सार्वजनिक कलाकृतियों में से एक है। मूल रूप से 1930 के दशक के अंत में संकल्पित और 1940 में समर्पित, यह ग्रेनाइट की तीन विशाल आकृतियों को दर्शाता है - संगीत, नृत्य और नाटक की देवियाँ (Muses) - जो एक बड़े फव्वारे के केंद्र में स्थित हैं।

o संगीत की म्यूज़ को एक वीणा या लायर जैसे वाद्य यंत्र के साथ दर्शाया गया है, जो उसकी कलात्मक प्रेरणा का प्रतीक है। उसकी शांत और ध्यानमग्न मुद्रा संगीत की आध्यात्मिक शक्ति को व्यक्त करती है।

o नृत्य की म्यूज़ को एक गतिशील और लयबद्ध मुद्रा में उकेरा गया है, जो नृत्य की ऊर्जा और प्रवाह को दर्शाता है। उसके शरीर की वक्रता और वस्त्रों की सिलवटें गति का भ्रम पैदा करती हैं।

o नाटक की म्यूज़ को दो मुखौटों - त्रासदी और कॉमेडी - के साथ चित्रित किया गया है, जो नाट्य कला के दो प्रमुख पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। उसकी अभिव्यक्ति में चिंतन और भावना का मिश्रण है। ये मूर्तियाँ लगभग 200 टन ग्रेनाइट से बनी हैं और इनकी ऊँचाई लगभग 15 फीट है। स्टेनली ने इन आकृतियों को एक सरल लेकिन शक्तिशाली शैली में तराशा है, जो आर्ट डेको और नियो-क्लासिकल प्रभावों का मिश्रण दिखाती है। फव्वारे का डिज़ाइन भी मूर्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित करता है, जिससे एक समग्र और प्रभावशाली दृश्य अनुभव होता है। यह कृति न केवल हॉलीवुड बाउल की पहचान बन गई है, बल्कि यह लॉस एंजिल्स की कलात्मक और सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी है। इस कृति ने स्टेनली को एक प्रमुख स्मारकीय मूर्तिकार के रूप में स्थापित किया।

• ऑस्कर प्रतिमा (The Academy Award Statuette - "Oscar") (1928-29): यकीनन जॉर्ज स्टेनली की सबसे विश्वव्यापी रूप से पहचानी जाने वाली कृति ऑस्कर प्रतिमा है। 1927 में एकेडमी ऑफ मोशन पिक्चर आर्ट्स एंड साइंसेज (AMPAS) की स्थापना के बाद, अकादमी ने सिनेमाई उपलब्धियों को सम्मानित करने के लिए एक पुरस्कार बनाने का निर्णय लिया। एमजीएम स्टूडियो के कला निर्देशक सेड्रिक गिबन्स ने एक नाइट की आकृति का प्रारंभिक डिज़ाइन तैयार किया जो एक फिल्म रील पर खड़ा था और धर्मयोद्धा की तलवार पकड़े हुए था। इस डिज़ाइन को त्रि-आयामी रूप देने का कार्य जॉर्ज स्टेनली को सौंपा गया। स्टेनली ने गिबन्स के स्केच के आधार पर मिट्टी में प्रतिमा को ढाला। कहा जाता है कि मैक्सिकन अभिनेता और फिल्म निर्माता एमिलियो "एल इंडियो" फर्नांडीज ने इस प्रतिमा के लिए मॉडल के रूप में काम किया था, हालांकि इस दावे पर कुछ विवाद भी रहा है। स्टेनली ने प्रतिमा को एक चिकनी, सुव्यवस्थित आर्ट डेको शैली में तराशा। प्रतिमा 13.5 इंच (34.3 सेमी) लंबी है और इसका वजन 8.5 पाउंड (3.856 किलोग्राम) है। यह कांस्य से बनी होती है और इस पर 24 कैरेट सोने की परत चढ़ाई जाती है। प्रतिमा एक योद्धा को दर्शाती है जो एक फिल्म रील पर खड़ा है, जिसके पाँच स्पोक अकादमी की पाँच मूल शाखाओं - अभिनेता, निर्देशक, निर्माता, तकनीशियन और लेखक -

अशोक मेनारिया, कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 19- *26*

का प्रतिनिधित्व करते हैं। पहली ऑस्कर प्रतिमाएँ 16 मई, 1929 को हॉलीवुड रूजवेल्ट होटल में आयोजित पहले अकादमी पुरस्कार समारोह में प्रदान की गईं। तब से, यह सुनहरी प्रतिमा फिल्म उद्योग में सर्वोच्च सम्मान का प्रतीक बन गई है। स्टेनली के डिज़ाइन की सादगी और प्रतिष्ठित शक्ति ने इसे समय की कसौटी पर खरा उतारा है और यह आज भी दुनिया भर में लाखों लोगों द्वारा तुरंत पहचानी जाती है।

- अन्य महत्वपूर्ण कार्य: इन दो प्रमुख कृतियों के अलावा, स्टेनली ने कई अन्य सार्वजनिक और निजी मूर्तियों, स्मारकों और वास्तुशिल्प सजावटों का निर्माण किया। इनमें सर आइजैक न्यूटन की एक प्रतिमा ग्रिफ़िथ वेधशाला, लॉस एंजिल्स में स्थापित है, जो विज्ञान के प्रति उनके सम्मान को दर्शाती है। उन्होंने कैलिफ़ोर्निया और उसके बाहर विभिन्न इमारतों और पार्कों के लिए भी काम किया। उनके कार्यों में अक्सर एक स्मारकीय गुणवत्ता और तकनीकी परिशुद्धता होती थी जो उनके समकालीनों के बीच उन्हें विशिष्ट बनाती थी।

विरासत और प्रभाव

जॉर्ज स्टेनली की विरासत अमेरिकी मूर्तिकला, विशेष रूप से 20वीं सदी के मध्य की सार्वजनिक कला में उनके योगदान में निहित है। हॉलीवुड बाउल की "म्यूज़" जैसी उनकी स्मारकीय कृतियाँ न केवल कला के नमूने हैं, बल्कि वे सामुदायिक पहचान और सांस्कृतिक गौरव के प्रतीक भी बन गई हैं। हालांकि, यह ऑस्कर प्रतिमा है जिसने उनके नाम को कला और सिनेमा के इतिहास में अमर कर दिया है। एक ऐसी प्रतिमा डिजाइन करना जो एक पूरे उद्योग की आकांक्षाओं और उपलब्धियों का प्रतीक बन जाए, एक दुर्लभ उपलब्धि है। स्टेनली के काम ने दिखाया कि कैसे कला रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन सकती है और कैसे एक अच्छी तरह से डिजाइन की गई वस्तु सांस्कृतिक प्रतीक बन सकती है। उनकी कलाकृतियाँ आज भी संग्रहालयों, सार्वजनिक स्थानों और निजी संग्रहों में मौजूद हैं, जो उनकी तकनीकी कुशलता और कलात्मक दृष्टि की गवाही देती हैं।

11 मई, 1970 - एक युग का अंत

11 मई, 1970 को जॉर्ज मैटलैंड स्टेनली का 67 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्होंने अपने पीछे एक समृद्ध कलात्मक विरासत छोड़ी, जिसने न केवल उनके समय के कला जगत को प्रभावित किया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनी। उनकी मृत्यु ने एक ऐसे कलाकार को हमसे छीन लिया जिसने अमेरिकी पश्चिम तट की कला और संस्कृति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। हॉलीवुड की चमक-दमक से लेकर सार्वजनिक स्मारकों की गरिमा तक, स्टेनली की कला का प्रभाव स्थायी है।

भाग 2: रॉबर्ट थॉमस - मानवीय संवेदनाओं और वेल्श विरासत के मूर्तिकार

रॉबर्ट थॉमस (Robert Thomas) एक प्रतिष्ठित वेल्श मूर्तिकार थे, जिनका जन्म 1 अगस्त, 1926 को साउथ वेल्स के कुमपार्क (Cwmparc) में हुआ था। वे अपनी कांस्य मूर्तियों, विशेष रूप से मानव आकृतियों और सार्वजनिक स्मारकों के लिए जाने जाते थे, जिनमें अक्सर वेल्श संस्कृति और इतिहास के तत्व शामिल होते थे। 11 मई, 1999 को उनके निधन से वेल्श कला जगत ने एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर खो दिया, लेकिन उनकी कृतियाँ वेल्स और उससे बाहर कई सार्वजनिक स्थानों पर आज भी उनकी कलात्मक दृष्टि और मानवीय संवेदनाओं को दर्शाती हैं।

अशोक मेनारिया, कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 19- *26*

प्रारंभिक जीवन, शिक्षा और कलात्मक अभिरुचि

रॉबर्ट थॉमस का जन्म एक खनन समुदाय में हुआ था, और उनके प्रारंभिक जीवन के अनुभवों ने उनकी कलात्मक संवेदनाओं को गहराई से प्रभावित किया। साउथ वेल्स की घाटियों का औद्योगिक परिदृश्य, वहाँ के लोगों का कठोर जीवन और सामुदायिक भावना उनके मानस में गहराई तक समा गए। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उन्होंने रॉयल नेवी में सेवा की, जिसके बाद उन्होंने कला के क्षेत्र में अपना करियर बनाने का फैसला किया।

युद्ध के बाद, थॉमस ने 1947 से 1950 तक कार्डिफ़ कॉलेज ऑफ़ आर्ट में अध्ययन किया। यहाँ उन्हें मूर्तिकला की पारंपरिक तकनीकों में महारत हासिल करने का अवसर मिला। इसके बाद, उन्होंने 1950 से 1952 तक लंदन के प्रतिष्ठित रॉयल कॉलेज ऑफ़ आर्ट में अपनी पढ़ाई जारी रखी, जहाँ उन्होंने फ्रैंक डॉब्सन और जॉन स्केपिंग जैसे प्रसिद्ध मूर्तिकारों के सानिध्य में अपनी कला को और निखारा। इन संस्थानों में प्राप्त शिक्षा ने उन्हें शास्त्रीय तकनीकों के साथ-साथ समकालीन कलात्मक प्रवृत्तियों की भी समझ प्रदान की।

रॉबर्ट थॉमस की कला पर अगस्टे रोडिन और जैकब एपस्टीन जैसे महान मूर्तिकारों का प्रभाव देखा जा सकता है, विशेष रूप से मानव शरीर की भावनात्मक और अभिव्यंजक क्षमता को पकड़ने की उनकी क्षमता में। वे मानव रूप को अपनी कला का केंद्रीय विषय मानते थे और इसके माध्यम से विभिन्न मानवीय भावनाओं, संघर्षों और आकांक्षाओं को व्यक्त करने का प्रयास करते थे।

कलात्मक विकास और शैलीगत पहचान

रॉबर्ट थॉमस की शैली मुख्य रूप से आलंकारिक (figurative) थी, और उन्होंने कांस्य को अपने पसंदीदा माध्यम के रूप में अपनाया। कांस्य की ढलाई की प्रक्रिया उन्हें अपनी आकृतियों में सूक्ष्म विवरण और बनावट जोड़ने की अनुमति देती थी, जिससे उनकी मूर्तियों में एक जीवंत और स्पर्शनीय गुणवत्ता आती थी।

उनकी शैली की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. मानवीयता और सहानुभूति: थॉमस की मूर्तियों में अक्सर आम लोगों, विशेष रूप से वेल्श श्रमिकों, महिलाओं और बच्चों का चित्रण होता है। वे इन पात्रों को गरिमा और सहानुभूति के साथ प्रस्तुत करते हैं, उनके दैनिक जीवन के संघर्षों और खुशियों को दर्शाते हैं।

2. गति और गतिशीलता: भले ही उनकी मूर्तियाँ स्थिर हों, उनमें अक्सर गति और ऊर्जा का आभास होता है। वे आकृतियों की मुद्राओं और भाव-भंगिमाओं के माध्यम से एक कहानी या भावना व्यक्त करने में कुशल थे।

3. सार्वजनिक कला पर जोर: थॉमस ने कई महत्वपूर्ण सार्वजनिक कलाकृतियाँ बनाईं, जिन्हें वेल्स और इंग्लैंड के विभिन्न शहरों में स्थापित किया गया। वे मानते थे कि कला को केवल दीर्घाओं और संग्रहालयों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि यह सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए।

4. वेल्श पहचान का चित्रण: उनकी कई कृतियों में वेल्श संस्कृति, इतिहास और मिथकों के तत्व शामिल हैं। वे अपनी कला के माध्यम से अपनी वेल्श विरासत को सम्मानित और संरक्षित करना चाहते थे। उदाहरण के लिए, उनकी कुछ मूर्तियाँ वेल्श खनिकों या प्रसिद्ध वेल्श हस्तियों को श्रद्धांजलि अर्पित करती हैं।

अशोक मेनारिया, कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 19- *26*

5. बनावट और सतह का उपचार: थॉमस कांस्य की सतह को विभिन्न तरीकों से उपचारित करते थे, कभी उसे चिकना और पॉलिश करते थे, तो कभी उसे खुरदुरा और बनावट वाला रखते थे, ताकि विषय वस्तु और भावना के अनुरूप प्रभाव उत्पन्न किया जा सके।

उन्होंने अपने करियर के दौरान कई महत्वपूर्ण कमीशन प्राप्त किए और वेल्श कला परिदृश्य में एक सम्मानित व्यक्ति बन गए। वे रॉयल कैमब्रियन अकादमी और सोसाइटी ऑफ़ पोर्ट्रेट स्कल्पटर्स के सदस्य भी थे।

महत्वपूर्ण सृजन

रॉबर्ट थॉमस ने अपने लंबे और उत्पादक करियर में कई यादगार मूर्तियाँ बनाईं। उनकी कुछ सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण कृतियों में शामिल हैं:

- "नाय बेवन" (Aneurin Bevan Statue, कार्डिफ़, 1987): क्वीन स्ट्रीट, कार्डिफ़ के केंद्र में स्थित राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा (NHS) के संस्थापक और प्रसिद्ध वेल्श राजनेता ऐन्युरिन बेवन की यह कांस्य प्रतिमा रॉबर्ट थॉमस की सबसे प्रतिष्ठित सार्वजनिक कलाकृतियों में से एक है। यह प्रतिमा बेवन को एक जोशीले वक्ता के रूप में, भाषण देते हुए या बहस करते हुए दर्शाती है। थॉमस ने बेवन के व्यक्तित्व की शक्ति और उनके विचारों की दृढ़ता को सफलतापूर्वक चित्रित किया है। प्रतिमा का आधार वेल्श स्लेट से बना है और इस पर बेवन के प्रसिद्ध उद्धरण अंकित हैं। यह न केवल एक राजनेता का स्मारक है, बल्कि यह वेल्श समाजवाद और सामाजिक न्याय के आदर्शों का भी प्रतीक है। इस कृति को व्यापक रूप से सराहा गया और यह कार्डिफ़ शहर का एक महत्वपूर्ण लैंडमार्क बन गई है।
- "द गर्ल" (The Girl, कॉलेज ग्रीन, ब्रिस्टल, 1987): ब्रिस्टल कैथेड्रल के पास कॉलेज ग्रीन पर स्थापित "द गर्ल" एक लोकप्रिय और प्रिय कांस्य प्रतिमा है। यह एक युवा लड़की को दर्शाती है जो आराम से घास पर लेटी हुई है, अपने सिर को हाथों पर टिकाए हुए, जैसे किसी सपने में खोई हो या बस आराम कर रही हो। यह मूर्ति अपनी सादगी, शांति और मानवीयता के लिए जानी जाती है। थॉमस ने लड़की की आकृति को कोमलता और स्वाभाविकता के साथ गढ़ा है। यह कृति शहरी वातावरण में एक शांत और चिंतनशील स्थान प्रदान करती है और अक्सर लोगों को इसके पास रुककर बातचीत करते या आराम करते देखा जा सकता है।
- "माइनर्स" (Miners, विभिन्न स्थान): खनन उद्योग साउथ वेल्स की पहचान का एक अभिन्न अंग रहा है, और रॉबर्ट थॉमस ने अपनी कई कृतियों में खनिकों के जीवन और श्रम को श्रद्धांजलि अर्पित की। इन मूर्तियों में अक्सर खनिकों को उनके औजारों के साथ, काम पर जाते हुए या थके हुए लेकिन गरिमापूर्ण मुद्रा में दर्शाया जाता है। ये मूर्तियाँ न केवल एक उद्योग का दस्तावेजीकरण करती हैं, बल्कि वे उन श्रमिकों के साहस, दृढ़ता और सामुदायिक भावना का भी सम्मान करती हैं जिन्होंने इस कठिन पेशे में अपना जीवन समर्पित कर दिया। उदाहरण के लिए, न्युब्रिज में स्थित "चार्टिस्ट माइनर" (Chartist Miner) प्रतिमा उल्लेखनीय है।
- "मदर एंड चाइल्ड" (Mother and Child) श्रृंखला: थॉमस ने मातृत्व और माँ और बच्चे के बीच के विशेष बंधन को दर्शाती हुई कई मूर्तियाँ बनाईं। इन कृतियों में कोमलता, सुरक्षा और प्रेम की भावनाएँ प्रमुख होती हैं। वे अक्सर माँ को अपने बच्चे को गले लगाते हुए या उसकी देखभाल करते हुए दिखाते हैं, जो सार्वभौमिक मानवीय अनुभवों को छूता है।
- अन्य पोर्ट्रेट बस्ट और सार्वजनिक मूर्तियाँ: इनके अतिरिक्त, थॉमस ने कई प्रसिद्ध व्यक्तियों के पोर्ट्रेट बस्ट बनाए, जिनमें वेल्श कवि डायलन थॉमस और अभिनेता रिचर्ड बर्टन शामिल हो सकते हैं (सटीक सूची के

अशोक मेनारिया, कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 19- *26*

लिए और शोध आवश्यक होगा)। उन्होंने वेल्स और इंग्लैंड के अन्य शहरों के लिए भी कई सार्वजनिक मूर्तियाँ और स्मारक डिजाइन किए, जिनमें से प्रत्येक उनकी विशिष्ट शैली और मानवीय दृष्टिकोण को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, स्वानसी में उनकी कुछ कृतियाँ स्थापित हैं।

उनकी कलाकृतियाँ अक्सर स्थानीय समुदायों के साथ गहरे संबंध स्थापित करती थीं, क्योंकि वे उन कहानियों और पात्रों को दर्शाती थीं जिनसे लोग खुद को जोड़ सकते थे।

कला जगत में योगदान और मान्यता

रॉबर्ट थॉमस का वेल्श कला जगत में महत्वपूर्ण योगदान था। उन्होंने न केवल अपनी मूर्तियों के माध्यम से वेल्श संस्कृति और पहचान को बढ़ावा दिया, बल्कि उन्होंने युवा कलाकारों को भी प्रेरित किया। उनकी सार्वजनिक कलाकृतियाँ शहरी परिदृश्यों का अभिन्न अंग बन गईं, कला को आम जनता के दैनिक जीवन में लाती रहीं। उन्हें अपनी कलात्मक उपलब्धियों के लिए कई सम्मान और पुरस्कार मिले। रॉयल कैमब्रियन अकादमी के सदस्य के रूप में, उन्होंने वेल्श कला के विकास में सक्रिय भूमिका निभाई। उनकी प्रदर्शनियाँ वेल्स और उससे बाहर आयोजित की गईं, और उनकी कृतियाँ कई महत्वपूर्ण निजी और सार्वजनिक संग्रहों में शामिल हैं। उन्हें विशेष रूप से उनकी क्षमता के लिए सराहा जाता था कि वे कांस्य जैसी कठोर सामग्री में मानवीय भावनाओं और कोमलता को कैसे उकेर सकते थे।

11 मई, 1999 - एक कलात्मक यात्रा का समापन

11 मई, 1999 को 72 वर्ष की आयु में रॉबर्ट थॉमस का निधन हो गया। उन्होंने अपने पीछे एक समृद्ध और विविध कलात्मक विरासत छोड़ी, जो मानवीय अनुभव की गहराई और वेल्श भावना की जीवंतता को दर्शाती है। उनकी मूर्तियाँ आज भी वेल्स और ब्रिटेन के सार्वजनिक स्थानों पर खड़ी हैं, जो उनके कौशल, उनकी दृष्टि और कला के प्रति उनके जुनून की स्थायी गवाही देती हैं। उनकी मृत्यु ने समकालीन ब्रिटिश मूर्तिकला में एक महत्वपूर्ण आवाज को खामोश कर दिया, लेकिन उनकी कला जीवित है।

निष्कर्ष

11 मई की तिथि दो भिन्न कलात्मक पथों पर चलने वाले मूर्तिकारों - जॉर्ज मैटलैंड स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस - की स्मृतियों को हमारे सामने लाती है। स्टेनली ने अपनी कला से हॉलीवुड के ग्लैमर और अमेरिकी सपनों को आकार दिया, उनकी ऑस्कर प्रतिमा आज भी विश्व सिनेमा की सर्वोच्च उपलब्धि का प्रतीक है, और हॉलीवुड बाउल की "म्यूज़" लॉस एंजिल्स की सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा है। उनकी कला में आर्ट डेको की चमक और शास्त्रीयता का संतुलन था, जो उनके समय के सौंदर्यबोध को दर्शाता है।

दूसरी ओर, रॉबर्ट थॉमस ने अपनी वेल्श जड़ों से प्रेरणा लेते हुए मानवीय भावनाओं और सामाजिक यथार्थ को अपनी कांस्य मूर्तियों में ढाला। ऐन्युरिन बेवन की उनकी प्रतिमा या ब्रिस्टल की "द गर्ल" जैसी कृतियाँ आम लोगों से संवाद स्थापित करती हैं और कला को सार्वजनिक जीवन का हिस्सा बनाती हैं। उनकी कला में सहानुभूति, गरिमा और सामुदायिक भावना की गहरी छाप है।

भले ही स्टेनली की प्रसिद्धि ऑस्कर के माध्यम से वैश्विक स्तर पर फैली हो और थॉमस का कार्यक्षेत्र मुख्य रूप से वेल्स और ब्रिटेन रहा हो, दोनों ही कलाकारों ने मूर्तिकला के माध्यम से अपने समय और समाज को प्रतिबिंबित किया। दोनों ने ही मानव रूप को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया और अपनी कृतियों के

अशोक मेनारिया, कला के दो स्तंभ, एक स्मृति दिवस (11 मई): जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस, कला समीक्षा , *खंड* 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 19- *26*

माध्यम से स्थायी प्रभाव छोड़ा। स्टेनली ने जहाँ भव्यता और प्रतिष्ठित प्रतीकों का निर्माण किया, वहीं थॉमस ने मानवीय संवेदनाओं और स्थानीय पहचान को मूर्त रूप दिया।

11 मई को इन दो मूर्तिकारों का निधन हमें यह याद दिलाता है कि कला समय की सीमाओं को पार कर जाती है। उनकी मूर्तियाँ आज भी दर्शकों से संवाद करती हैं, कहानियाँ कहती हैं और भावनाओं को जगाती हैं। जॉर्ज स्टेनली और रॉबर्ट थॉमस की कलात्मक विरासत मूर्तिकला की उस शाश्वत शक्ति का प्रमाण है जो संस्कृति को समृद्ध करती है, इतिहास को संरक्षित करती है और मानवीय आत्मा को प्रेरित करती है। उनकी कृतियाँ हमें यह सिखाती हैं कि कैसे एक कलाकार अपने माध्यम के द्वारा न केवल सौंदर्य का सृजन करता है, बल्कि अपने समाज और समय का एक महत्वपूर्ण भाष्यकार भी बन जाता है। इन दो महान कलाकारों की स्मृति और उनका योगदान कला जगत में सदैव जीवित रहेगा।

कुशाग्र जैन, ज़ॉर्ज़ ब्राक: घनवाद के सह-शिल्पी और आधुनिक कला के प्रणेता, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* *27 - 35*

ज़ॉर्ज़ ब्राक: घनवाद के सह-शिल्पी और आधुनिक कला के प्रणेता

कुशाग्र जैन*

20वीं सदी की चित्रकला के इतिहास में ज़ॉर्ज़ ब्राक (Georges Braque, 1882-1963) का नाम अत्यंत सम्मान और महत्व के साथ लिया जाता है। वे न केवल फ्रांस के एक प्रमुख चित्रकार, मूर्तिकार और प्रिंटमेकर थे, बल्कि पाब्लो पिकासो के साथ घनवाद (Cubism) नामक क्रांतिकारी कला आंदोलन के सह-संस्थापक भी थे। घनवाद ने पश्चिमी कला की सदियों पुरानी परंपराओं को चुनौती दी और आधुनिक कला के विकास की दिशा निर्धारित की। ब्राक की कला यात्रा फॉविज़्म के जीवंत रंगों से शुरू होकर घनवाद के विश्लेषणात्मक विखंडन और संश्लेषणात्मक पुनर्निर्माण तक फैली, और अंततः उनके परिपक्व वर्षों की शांत, ध्यानमग्न और काव्यात्मक कृतियों में परिणत हुई। उनकी कला में रूप, स्थान, बनावट और प्रकाश का गहन अन्वेषण निहित है, जो दर्शकों को वस्तुओं और उनके आसपास की दुनिया को एक नए दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रेरित करता है। यह आलेख ज़ॉर्ज़ ब्राक के जीवन, उनके कलात्मक विकास के विभिन्न चरणों, विशेष रूप से घनवाद के निर्माण और विकास में उनके मौलिक योगदान, पिकासो के साथ उनकी ऐतिहासिक साझेदारी, और आधुनिक कला पर उनके स्थायी प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास करेगा।

प्रारंभिक जीवन और कलात्मक शुरुआत

ज़ॉर्ज़ ब्राक का जन्म 13 मई 1882 को फ्रांस के अर्जेंतियुई (Argenteuil-sur-Seine) नामक स्थान पर हुआ था, जो उस समय प्रभाववादी चित्रकारों का एक पसंदीदा स्थल था। उनका परिवार कला और शिल्प से जुड़ा हुआ था; उनके पिता और दादा दोनों कुशल हाउस पेंटर और डेकोरेटर थे। इस पारिवारिक पृष्ठभूमि ने ब्राक की कलात्मक रुचियों को बचपन से ही आकार दिया। उन्होंने अपने पिता से सजावटी तकनीकों, जैसे लकड़ी और संगमरमर की नकल (faux bois, faux marbre) और अक्षरांकन (lettering) का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया, जिसका प्रभाव बाद में उनके घनवादी कार्यों, विशेषकर 'पैपियर कोला' (Papier Collé) में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

1890 में उनका परिवार ले हार्वे (Le Havre) में बस गया। ब्राक ने स्थानीय इकोले डेस ब्यू-आर्ट्स (École des Beaux-Arts) में शाम की कक्षाओं में भाग लेना शुरू किया, जहाँ उन्होंने चार्ल्स लुइलियर (Charles Lhuillier) के मार्गदर्शन में चित्रकला का अध्ययन किया। लुइलियर, जो स्वयं कैमिली कोरो (Camille Corot) जैसे कलाकारों के मित्र थे, ने युवा ब्राक को कला की औपचारिक शिक्षा प्रदान की। हालांकि, ब्राक अकादमिक प्रशिक्षण से कुछ हद तक ऊब चुके थे और उन्हें अपने पिता के व्यवसाय में एक प्रशिक्षु के रूप में काम करना अधिक रुचिकर लगता था।

1900 के आसपास, ब्राक पेरिस चले गए, जहाँ उन्होंने एक सजावटी चित्रकार के रूप में प्रशिक्षण जारी रखा और साथ ही मोंटमार्ट्रे (Montmartre) में कला के जीवंत माहौल में घुलमिल गए। उन्होंने एकेडेमी हम्बर्ट (Académie Humbert) में दाखिला लिया, जहाँ उनकी मुलाकात मैरी लॉरेंसिन (Marie Laurencin) और फ्रांसिस पिकाबिया (Francis Picabia) जैसे कलाकारों से हुई। इस अवधि के दौरान, उनकी शैली प्रभाववाद और प्रतीकवाद से प्रभावित थी, लेकिन वे जल्द ही एक नई, अधिक क्रांतिकारी दिशा की ओर बढ़ने वाले थे।

फॉविज़्म की ओर मोड़ और प्रारंभिक सफलता

कुशाग्र जैन, ज़ॉर्ज़ ब्राक: घनवाद के सह-शिल्पी और आधुनिक कला के प्रणेता, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 27 - 35*

पेरिस का कला जगत 20वीं सदी की शुरुआत में नवीन प्रयोगों और आंदोलनों से उबल रहा था। 1905 के सैलून डी'ऑटोम्ने (Salon d'Automne) में हेनरी मातिस (Henri Matisse), आंद्रे डेरेन (André Derain) और अन्य कलाकारों के एक समूह ने अपने बोल्ड, गैर-प्राकृतिक रंगों और ऊर्जावान ब्रशवर्क से कला जगत में सनसनी फैला दी। आलोचक लुई वॉक्सेल (Louis Vauxcelles) ने उनके कार्यों को देखकर उन्हें 'लेस फॉव्स' (Les Fauves - जंगली जानवर) कहा, और इस प्रकार फॉविज़्म (Fauvism) आंदोलन का नामकरण हुआ।

ब्राक इन नई प्रवृत्तियों से गहराई से प्रभावित हुए। 1906 में, उन्होंने मातिस और डेरेन के कार्यों को देखा और उनकी रंग की स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की तीव्रता ने उन्हें आकर्षित किया। वे स्वयं फॉविस्ट शैली को अपनाने लगे। उन्होंने दक्षिण फ्रांस की यात्रा की, विशेष रूप से ला सियोटा (La Ciotat) और एल'एस्टाक (L'Estaque) में समय बिताया, जहाँ पॉल सेज़ान (Paul Cézanne) ने भी काम किया था। इन स्थानों के तीव्र प्रकाश और जीवंत रंगों ने ब्राक के फॉविस्ट कार्यों को प्रेरित किया। 'ला सियोटा में लैंडस्केप' (Landscape at La Ciotat, 1907) जैसे उनके चित्र चमकीले, असंबद्ध रंगों और गतिशील ब्रशवर्क का प्रदर्शन करते हैं।

मार्च 1907 में, ब्राक ने पेरिस में सैलून डेस इंडिपेंडेंट्स (Salon des Indépendants) में अपने छह फॉविस्ट चित्रों का प्रदर्शन किया। इन कार्यों ने ध्यान आकर्षित किया और सभी छह चित्रों को जर्मन कला संग्राहक विल्हेम उहडे (Wilhelm Uhde) ने खरीद लिया। इसी प्रदर्शनी में उनकी मुलाकात युवा जर्मन कला डीलर डेनियल-हेनरी क्हानवीलर (Daniel-Henry Kahnweiler) से हुई, जो बाद में ब्राक और पिकासो दोनों के प्रमुख डीलर और घनवाद के समर्थक बने। यह प्रारंभिक सफलता ब्राक के लिए महत्वपूर्ण थी, लेकिन उनका कलात्मक अन्वेषण अभी एक और निर्णायक मोड़ लेने वाला था।

पिकासो से मुलाकात और घनवाद का जन्म

1907 का वर्ष ब्राक के कलात्मक जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। इस वर्ष न केवल उन्हें फॉविज़्म में प्रारंभिक सफलता मिली, बल्कि उनकी मुलाकात पाब्लो पिकासो (Pablo Picasso) से भी हुई। यह मुलाकात कवि और कला समीक्षक गिलियूम अपोलिनेर (Guillaume Apollinaire) के माध्यम से पिकासो के बाटो-लावोइर (Bateau-Lavoir) स्टूडियो में हुई। उस समय, पिकासो अपने क्रांतिकारी चित्र 'लेस डेमोइसेल्स डी'अविग्नन' (Les Demoiselles d'Avignon) पर काम पूरा कर रहे थे। इस चित्र ने, जिसमें अफ्रीकी मुखौटों का प्रभाव और आकृतियों का खंडित चित्रण था, ब्राक को चौंका दिया लेकिन साथ ही गहराई से सोचने पर मजबूर कर दिया।

ब्राक और पिकासो दोनों ही पॉल सेज़ान के काम से अत्यधिक प्रभावित थे। सेज़ान की मृत्यु के बाद 1907 में पेरिस में उनके कार्यों की एक बड़ी पूर्वव्यापी प्रदर्शनी आयोजित की गई थी। सेज़ान ने प्रकृति को "बेलन, गोले, शंकु के संदर्भ में" चित्रित करने की बात कही थी और वस्तुओं की अंतर्निहित ज्यामितीय संरचना पर जोर दिया था। उन्होंने पारंपरिक परिप्रेक्ष्य को चुनौती दी थी और विभिन्न दृष्टिकोणों को एक ही कैनवस पर संयोजित करने का प्रयास किया था। सेज़ान की यह संरचनात्मक दृष्टि और परिप्रेक्ष्य के साथ प्रयोग ब्राक और पिकासो के लिए घनवाद विकसित करने का आधार बने।

1908 की गर्मियों में, ब्राक एल'एस्टाक लौट आए, वही स्थान जहाँ सेज़ान ने काम किया था। यहाँ उन्होंने लैंडस्केप चित्रों की एक श्रृंखला बनाई, जिसमें उन्होंने सेज़ान के सिद्धांतों को आगे बढ़ाया। 'एल'एस्टाक में मकान' (Houses at L'Estaque, 1908) जैसे चित्रों में, उन्होंने घरों और पेड़ों को सरल ज्यामितीय आकारों (घन, शंकु) में बदल दिया, पारंपरिक परिप्रेक्ष्य को त्याग दिया, और रंग पैलेट को भूरे, हरे और गेरू जैसे मिट्टी के

कुशाग्र जैन, ज़ॉर्ज़ ब्राक: घनवाद के सह-शिल्पी और आधुनिक कला के प्रणेता, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 27 - 35*

रंगों तक सीमित कर दिया। उन्होंने विभिन्न दृष्टिकोणों को संयोजित किया, जिससे एक चपटा, बहुआयामी प्रभाव उत्पन्न हुआ।

जब ब्राक ने इन चित्रों को 1908 में सैलून डी'ऑटोम्ने में प्रस्तुत करने का प्रयास किया, तो जूरी (जिसमें मातिस भी शामिल थे) ने उन्हें अस्वीकार कर दिया। क्हानवीलर ने तुरंत ब्राक के लिए अपनी गैलरी में एक एकल प्रदर्शनी आयोजित की। इस प्रदर्शनी की समीक्षा करते हुए, आलोचक लुई वॉक्सेल ने (जिन्होंने फॉविज़्म का नामकरण किया था) लिखा कि ब्राक "हर चीज को ज्यामितीय आरेख, क्यूब्स में बदल देता है"। इस प्रकार, अनजाने में ही सही, 'घनवाद' (Cubism) शब्द का जन्म हुआ।

इस बिंदु से, ब्राक और पिकासो के बीच एक गहन और अद्वितीय कलात्मक साझेदारी शुरू हुई। वे लगभग दैनिक रूप से मिलते थे, एक-दूसरे के काम पर चर्चा करते थे, और एक-दूसरे के विचारों से प्रेरणा लेते थे। ब्राक ने बाद में इस अवधि को "पहाड़ पर एक साथ रस्सी से बंधे दो पर्वतारोहियों" की तरह काम करने जैसा बताया। अगले कुछ वर्षों तक, उन्होंने मिलकर कला की दुनिया को हमेशा के लिए बदलने वाले आंदोलन, घनवाद को विकसित और परिष्कृत किया।

विश्लेषणात्मक घनवाद (Analytic Cubism) (c. 1909-1912)

लगभग 1909 से 1912 तक की अवधि को विश्लेषणात्मक घनवाद का चरण माना जाता है। इस चरण में, ब्राक और पिकासो ने वस्तुओं को उनके मूल ज्यामितीय रूपों में 'विश्लेषित' या विखंडित करने पर ध्यान केंद्रित किया। उनका उद्देश्य किसी वस्तु को केवल एक निश्चित बिंदु से देखने के बजाय, उसे विभिन्न दृष्टिकोणों से एक साथ प्रस्तुत करना था, ताकि वस्तु की एक अधिक संपूर्ण और 'वास्तविक' (जैसा कि वे मानते थे) छवि बनाई जा सके।

विश्लेषणात्मक घनवाद की प्रमुख विशेषताएँ:

- विखंडन (Fragmentation): वस्तुओं और आकृतियों को छोटे, अन्तर्विभाजक समतलों या पहलुओं (facets) में तोड़ा जाता था।
- बहु-दृष्टिकोण (Multiple Viewpoints/Simultaneity): किसी वस्तु के विभिन्न पक्षों (जैसे सामने, बगल, ऊपर) को एक ही समय में कैनवस पर दिखाया जाता था। इससे पारंपरिक रेखीय परिप्रेक्ष्य (linear perspective) पूरी तरह से समाप्त हो गया।
- मोनोक्रोमैटिक पैलेट (Monochromatic Palette): रंग को लगभग पूरी तरह से हटा दिया गया, ताकि रूप और संरचना पर पूरा ध्यान केंद्रित किया जा सके। भूरे, गेरू, ग्रे और काले जैसे सीमित, म्यूट रंगों का उपयोग किया गया। उनका मानना था कि चमकीले रंग दर्शक का ध्यान रूप के विश्लेषण से भटका सकते हैं।
- रूप और स्थान का अंतर्मिलन (Interpenetration of Form and Space): वस्तु और उसके आसपास के स्थान के बीच की सीमाएँ धुंधली हो गईं। समतल एक-दूसरे में विलीन होते हुए प्रतीत होते थे, जिसे 'पैसेज' (passage) तकनीक कहा जाता है। इससे एक एकीकृत, यद्यपि जटिल, चित्र तल का निर्माण हुआ।
- विषय वस्तु (Subject Matter): मुख्य रूप से स्थिर जीवन (still life) - जैसे संगीत वाद्ययंत्र (वायलिन, गिटार, क्लैरिनेट), बोतलें, गिलास, फल - और कभी-कभी पोर्ट्रेट पर ध्यान केंद्रित किया गया। ये परिचित वस्तुएँ थीं जिन्हें उनके संरचनात्मक गुणों के लिए चुना गया था।

कुशाग्र जैन, ज़ॉर्ज़ ब्राक: घनवाद के सह-शिल्पी और आधुनिक कला के प्रणेता, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 27 - 35*

ब्राक के इस दौर के प्रमुख कार्यों में 'वायलिन और पैलेट' (Violin and Palette, 1909) शामिल है। इसमें वायलिन को कई कोणों से एक साथ दिखाया गया है, जिससे उसके रूप की जटिलता प्रकट होती है। पृष्ठभूमि और अग्रभूमि लगभग अविभाज्य हैं, और सीमित रंग योजना संरचना पर जोर देती है। एक कील और उसकी छाया का यथार्थवादी चित्रण चित्र में गहराई का भ्रम पैदा करता है, जो अन्यथा सपाट घनवादी तल के विपरीत है।

'पियानो और मैंडोला' (Piano and Mandola, 1909-10) और 'क्लैरिनेट और रम की बोतल एक मेंटलपीस पर' (Clarinet and Bottle of Rum on a Mantelpiece, 1911) जैसे अन्य कार्यों में भी यही विखंडन, बहु-दृष्टिकोण और मोनोक्रोमैटिक पैलेट दिखाई देता है।

'पुर्तगाली' (The Portuguese, 1911) ब्राक का एक महत्वपूर्ण चित्र है जिसमें पहली बार स्टेंसिल से बने अक्षरों और संख्याओं (जैसे "D BAL" और "10,40") का प्रयोग किया गया। ये तत्व चित्र तल पर सपाट रूप से मौजूद रहते हैं, गहराई के भ्रम को तोड़ते हैं और चित्र की सतह की वास्तविकता पर जोर देते हैं। यह बाहरी दुनिया के संकेतों को चित्र में शामिल करने की दिशा में एक कदम था, जो संश्लेषणात्मक घनवाद की ओर ले गया।

हालांकि ब्राक और पिकासो इस अवधि में बहुत निकटता से काम कर रहे थे और कभी-कभी उनके कार्यों को अलग करना मुश्किल होता है, फिर भी सूक्ष्म अंतर मौजूद थे। ब्राक की रचनाएँ अक्सर अधिक व्यवस्थित, संतुलित और शांत प्रतीत होती हैं, जबकि पिकासो के काम में अधिक ऊर्जा और कभी-कभी एक विस्फोटक गुण होता है। ब्राक बनावट (texture) के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील थे और अक्सर अपने ब्रशवर्क के माध्यम से विभिन्न सतहों का भ्रम पैदा करने का प्रयास करते थे।

विश्लेषणात्मक घनवाद ने कला की दुनिया में हलचल मचा दी। इसने वास्तविकता को चित्रित करने के पारंपरिक तरीकों को मौलिक रूप से चुनौती दी और कलाकार की भूमिका को प्रकृति के नकलची से रूप और स्थान के अन्वेषक के रूप में बदल दिया।

संश्लेषणात्मक घनवाद (Synthetic Cubism) (c. 1912-1914)

लगभग 1912 के आसपास, ब्राक और पिकासो ने घनवाद को एक नई दिशा में विकसित करना शुरू किया, जिसे संश्लेषणात्मक घनवाद कहा जाता है। यदि विश्लेषणात्मक घनवाद वस्तुओं को विखंडित करने पर केंद्रित था, तो संश्लेषणात्मक घनवाद वस्तुओं को सरल, सपाट आकृतियों और संकेतों का उपयोग करके 'संश्लेषित' या पुनर्निर्मित करने पर केंद्रित था। यह चरण अधिक रंगीन, अधिक सजावटी और बाहरी दुनिया की वास्तविक सामग्रियों के समावेश के लिए जाना जाता है।

संश्लेषणात्मक घनवाद की प्रमुख विशेषताएँ:

- सरल आकार और रंग: जटिल विखंडन के बजाय, वस्तुओं को बड़े, सपाट, ज्यामितीय आकृतियों के माध्यम से दर्शाया गया। रंग पैलेट फिर से व्यापक और उज्जवल हो गया।
- वास्तविक सामग्रियों का समावेश: इस चरण का सबसे महत्वपूर्ण नवाचार बाहरी दुनिया से वास्तविक वस्तुओं या उनके टुकड़ों को कलाकृति में शामिल करना था।
- पैपियर कोला (Papier Collé - चिपका हुआ कागज): ज़ॉर्ज़ ब्राक को इस तकनीक का अग्रणी माना जाता है। सितंबर 1912 में, एविग्नन में एक दुकान की खिड़की में लकड़ी के दाने के पैटर्न वाले वॉलपेपर को

कुशाग्र जैन, ज़ॉर्ज़ ब्राक: घनवाद के सह-शिल्पी और आधुनिक कला के प्रणेता, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 27 - 35*

देखकर, ब्राक को इसे अपने चित्र में शामिल करने का विचार आया। उन्होंने 'फल की थाली और गिलास' (Fruit Dish and Glass, 1912) नामक चारकोल ड्राइंग बनाई और उसमें लकड़ी के दाने वाले वॉलपेपर के टुकड़े चिपका दिए। यह कला के इतिहास में एक क्रांतिकारी क्षण था। पैपियर कोला ने चित्र तल पर वास्तविक बनावट और पैटर्न लाए, वास्तविकता और प्रतिनिधित्व के बीच एक जटिल संवाद स्थापित किया, और चित्र की सपाटता पर जोर दिया। ब्राक ने अक्सर समाचार पत्र की कतरनें, सिगरेट के पैकेट, लेबल आदि का भी इस्तेमाल किया।

- कोलाज (Collage): पिकासो ने ब्राक के पैपियर कोला से प्रेरणा लेते हुए कोलाज तकनीक को विकसित किया, जिसमें कागज के अलावा अन्य सामग्री जैसे कपड़े, रस्सी, टिन आदि को भी कैनवस पर चिपकाया जाता था।
- संकेत और प्रतीक: वस्तुओं को अक्सर उनके आवश्यक संकेतों या प्रतीकों द्वारा दर्शाया जाता था (जैसे, एक गिलास का गोल किनारा, एक वायलिन का स्क्रॉल)।
- स्टेंसिल अक्षर: विश्लेषणात्मक घनवाद में शुरू हुआ अक्षरों और संख्याओं का प्रयोग जारी रहा और अधिक प्रमुख हो गया, जो अक्सर कैफे संस्कृति या समाचार पत्रों का संदर्भ देते थे।

ब्राक के संश्लेषणात्मक घनवाद के उत्कृष्ट उदाहरणों में 'वायलिन और पाइप ('ले कोटिडियन')' (Violin and Pipe ('Le Quotidien'), 1913) शामिल है, जिसमें उन्होंने चारकोल ड्राइंग के साथ समाचार पत्र 'ले कोटिडियन' की कतरनें और नकली लकड़ी के दाने वाले कागज का उपयोग किया है। 'क्लैरिनेट' (Clarinet, 1913) में भी विभिन्न प्रकार के चिपकाए गए कागजों, चारकोल और चाक का उपयोग करके एक संगीत वाद्ययंत्र का सार प्रस्तुत किया गया है।

संश्लेषणात्मक घनवाद ने कला की सीमाओं का और विस्तार किया। इसने इस विचार को चुनौती दी कि कला को केवल पारंपरिक माध्यमों (जैसे तेल पेंट) से ही बनाया जाना चाहिए। वास्तविक वस्तुओं को शामिल करके, ब्राक और पिकासो ने कला और जीवन के बीच की रेखा को धुंधला कर दिया और कलाकृति की भौतिक उपस्थिति पर जोर दिया। यह तकनीक दादावाद (Dadaism), अतियथार्थवाद (Surrealism) और बाद के कई कला आंदोलनों के लिए अत्यंत प्रभावशाली साबित हुई।

प्रथम विश्व युद्ध और कलात्मक पथ में बदलाव

1914 में प्रथम विश्व युद्ध के फैलने से ज़ॉर्ज़ ब्राक और पाब्लो पिकासो की गहन कलात्मक साझेदारी अचानक समाप्त हो गई। ब्राक, एक फ्रांसीसी नागरिक के रूप में, सेना में भर्ती हो गए और उन्हें पश्चिमी मोर्चे पर भेज दिया गया। पिकासो, एक स्पेनिश नागरिक के रूप में, युद्ध में शामिल नहीं हुए और पेरिस में ही रहे।

युद्ध का अनुभव ब्राक के लिए विनाशकारी था। 1915 में, कैरेंसी (Carency) में लड़ते हुए, उनके सिर में गंभीर चोट लगी, जिसके लिए ट्रेपनेशन (trepanation - खोपड़ी में छेद करना) की आवश्यकता पड़ी। इस चोट के कारण वे अस्थायी रूप से अंधे हो गए और उन्हें लंबे समय तक अस्पताल में और स्वास्थ्य लाभ में रहना पड़ा। इस दौरान वे चित्र बनाने में असमर्थ थे। यह उनके जीवन का एक अत्यंत कठिन दौर था, जिसने उन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से प्रभावित किया।

1917 में, ब्राक को सेना से छुट्टी मिल गई और वे धीरे-धीरे कला की दुनिया में लौटे। लेकिन युद्ध के अनुभव और पिकासो से अलगाव ने उनके कलात्मक पथ को बदल दिया था। हालांकि उन्होंने घनवाद के

कुशाग्र जैन, ज़ॉर्ज़ ब्राक: घनवाद के सह-शिल्पी और आधुनिक कला के प्रणेता, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 27 - 35*

सिद्धांतों को पूरी तरह से नहीं छोड़ा, लेकिन उनकी शैली अधिक व्यक्तिगत, कम सैद्धांतिक और अधिक सहज हो गई। उनकी साझेदारी का गहन बौद्धिक आदान-प्रदान समाप्त हो चुका था, और अब दोनों कलाकार अपने अलग-अलग रास्तों पर चल पड़े थे। ब्राक की कला में एक नई शांति, एक अधिक गीतात्मक गुण और रूप की स्पष्टता की ओर झुकाव दिखाई देने लगा।

युद्धोपरांत काल और शैली का विकास

युद्ध के बाद, 1920 के दशक में, ब्राक की कला में एक महत्वपूर्ण विकास हुआ। उन्होंने घनवाद की संरचनात्मक जटिलता को बनाए रखा, लेकिन उसमें अधिक सुलभता, सजावटी गुण और रंगों का समृद्ध उपयोग जोड़ा। विश्लेषणात्मक और संश्लेषणात्मक घनवाद के कठोर बौद्धिकतावाद के स्थान पर, उनकी कला में अब एक अधिक संवेदी और अनुभवात्मक गुण आ गया था।

इस अवधि की एक महत्वपूर्ण श्रृंखला 'केनफोर' (Canephores - टोकरी ले जाने वाली महिलाएँ) है, जो लगभग 1922 में शुरू हुई। इन चित्रों में, ब्राक ने शास्त्रीय कला की ओर कुछ हद तक वापसी की, जिसमें सुडौल, त्रि-आयामी महिला आकृतियों को शांत और गरिमापूर्ण ढंग से चित्रित किया गया। हालांकि इनमें अभी भी घनवादी समतलीकरण और संरचना के तत्व मौजूद थे, लेकिन वे पहले के कार्यों की तुलना में अधिक प्राकृतिक और कम खंडित थे।

स्थिर जीवन (Still Life) ब्राक की कला का केंद्रीय विषय बना रहा। उन्होंने साधारण घरेलू वस्तुओं - फल, जग, संगीत वाद्ययंत्र, मेज़पोश - को चित्रित करना जारी रखा, लेकिन अब उन्होंने बनावट, प्रकाश और स्थान के सूक्ष्म खेल पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। उनकी 'गुएरडॉन' (Guéridon - छोटी गोल मेज) श्रृंखला इस अवधि का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें वस्तुओं को अक्सर एक छोटी मेज पर व्यवस्थित किया जाता है, और रंगों का उपयोग अधिक जीवंत और सामंजस्यपूर्ण होता है। वे वस्तुओं के सार और उनकी आंतरिक उपस्थिति को पकड़ने का प्रयास कर रहे थे, न कि केवल उनके बाहरी रूप का विश्लेषण करने का।

ब्राक ने परिदृश्य और समुद्री दृश्यों को भी चित्रित करना जारी रखा, खासकर नॉर्मंडी तट पर स्थित वरेंजेविल-सुर-मेर (Varengeville-sur-Mer) में, जहाँ उन्होंने एक घर बनाया था। उनके परिदृश्य अक्सर शांत, चिंतनशील और संरचनात्मक स्पष्टता वाले होते हैं।

1920 के दशक में ब्राक को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। उनकी प्रदर्शनियाँ यूरोप और अमेरिका में आयोजित हुईं और उन्हें 20वीं सदी के प्रमुख आधुनिक कलाकारों में से एक माना जाने लगा। सर्गेई दिआगिलेव (Sergei Diaghilev) के बैले रसेस (Ballets Russes) के लिए सेट और वेशभूषा डिजाइन करने जैसे कमीशन भी उन्हें मिले।

1930 और 1940 का दशक: परिपक्वता और अन्वेषण

1930 के दशक में, ब्राक ने अपनी कलात्मक शैली को और परिष्कृत किया। उन्होंने बनावट और सामग्री के साथ प्रयोग करना जारी रखा, अक्सर अपने पेंट में रेत या प्लास्टर जैसी सामग्री मिलाते थे ताकि सतह को एक स्पर्शनीय गुण प्रदान किया जा सके। उनके रंग पैलेट में गहरे, समृद्ध रंगों का प्रभुत्व था, और उनकी रचनाएँ अक्सर अधिक जटिल और स्तरित हो गईं।

कुशाग्र जैन, ज़ॉर्ज़ ब्राक: घनवाद के सह-शिल्पी और आधुनिक कला के प्रणेता, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 27 - 35*

इस दशक में उन्होंने नक्काशी और मूर्तिकला में भी महत्वपूर्ण काम किया। उन्होंने प्लास्टर में कई मूर्तियाँ बनाईं, जो अक्सर प्राचीन ग्रीक रूपांकनों और पौराणिक कथाओं से प्रेरित थीं। उनकी नक्काशी, विशेष रूप से एचिंग और लिथोग्राफी, उनके चित्रमय कार्यों के समान ही संरचना और बनावट पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945) और फ्रांस पर जर्मन कब्जे का ब्राक की कला पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे पेरिस और वरेंजेविल में रहे और काम करना जारी रखा, लेकिन उनके कार्यों में एक अधिक गंभीर और अंतर्मुखी मनोदशा परिलक्षित होती है। रंग गहरे और उदास हो गए, और 'वानिटास' (Vanitas) थीम - खोपड़ी, बुझी हुई मोमबत्तियाँ, जो जीवन की नश्वरता का प्रतीक हैं - उनके स्थिर जीवन चित्रों में दिखाई देने लगी। 'बिलियर्ड टेबल' (Billiard Table) श्रृंखला, जिसे उन्होंने युद्ध के दौरान और उसके बाद चित्रित किया, सीमित स्थान, तनावपूर्ण रचना और रहस्यमय वातावरण के माध्यम से उस युग की चिंता और अनिश्चितता को दर्शाती है।

युद्ध के बावजूद, ब्राक की प्रतिष्ठा बढ़ती रही। 1937 में, उन्हें कार्नेगी पुरस्कार (Carnegie Prize) से सम्मानित किया गया, और 1948 में, उन्हें वेनिस बिएननेल (Venice Biennale) में पेंटिंग के लिए भव्य पुरस्कार मिला।

स्टूडियो श्रृंखला (The Studio Series - Ateliers) (1949-1956)

युद्ध के बाद के वर्षों में, ब्राक ने 'स्टूडियो' (Ateliers) नामक चित्रों की एक महत्वपूर्ण श्रृंखला बनाई, जिसे उनके अंतिम महान चक्रों में से एक माना जाता है। ये आठ बड़ी कैनवस पेंटिंग उनके स्टूडियो के आंतरिक भाग को दर्शाती हैं, लेकिन ये यथार्थवादी चित्रण नहीं हैं। इसके बजाय, वे स्थान, स्मृति, कला और कलाकार की उपस्थिति के बारे में जटिल, स्तरित ध्यान हैं।

इन चित्रों में, स्टूडियो की वस्तुएँ - ईज़ल, कैनवस, पैलेट, फूलदान, संगीत वाद्ययंत्र, फर्नीचर - एक-दूसरे में विलीन होती हुई, ओवरलैप करती हुई और पारदर्शिता के साथ चित्रित की गई हैं। स्थान स्वयं मुड़ा हुआ और बहुआयामी प्रतीत होता है, जो विश्लेषणात्मक घनवाद के सिद्धांतों की याद दिलाता है, लेकिन एक अधिक व्यक्तिगत और काव्यात्मक तरीके से।

इस श्रृंखला की एक खास विशेषता एक बड़े, रहस्यमय पक्षी के रूपांकन का उभरना है। यह पक्षी, जो अक्सर कैनवस या ईज़ल पर चित्रित होता हुआ दिखाई देता है, श्रृंखला के विकसित होने के साथ-साथ अधिक प्रमुख होता जाता है। यह उड़ान, स्वतंत्रता, रचनात्मक प्रेरणा और शायद कलाकार की आत्मा का प्रतीक बन जाता है।

'स्टूडियो VIII' (Atelier VIII, 1954-55) और 'स्टूडियो IX' (Atelier IX, 1956) इस श्रृंखला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जो ब्राक की परिपक्व शैली की जटिलता, उनके स्थान और रूप की महारत, और उनकी कला के गहरे चिंतनशील स्वभाव को दर्शाते हैं।

पक्षी श्रृंखला (The Birds Series - Oiseaux) (1950s-1963)

स्टूडियो श्रृंखला में उभरा पक्षी का रूपांकन ब्राक के जीवन के अंतिम दशक का प्रमुख विषय बन गया। 1950 के दशक के मध्य से लेकर 1963 में उनकी मृत्यु तक, उन्होंने पक्षियों को चित्रित करने वाली कई पेंटिंग, प्रिंट और मूर्तियां बनाईं।

ये पक्षी यथार्थवादी चित्रण नहीं हैं, बल्कि सरल, सुलेखित (calligraphic) आकृतियाँ हैं जो उड़ान, स्थान और आध्यात्मिक मुक्ति का सार पकड़ती हैं। वे अक्सर एक सपाट, अमूर्त पृष्ठभूमि के सामने उड़ते हुए या तैरते

कुशाग्र जैन, ज़ॉर्ज़ ब्राक: घनवाद के सह-शिल्पी और आधुनिक कला के प्रणेता, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 27 - 35*

हुए दिखाई देते हैं। रंग योजना अक्सर सीमित होती है, जिसमें नीले, काले, सफेद और भूरे रंग प्रमुख होते हैं। इन कार्यों में एक अद्भुत सादगी और शांति है, जो ब्राक के अंतिम वर्षों की ध्यानमग्न स्थिति को दर्शाती है।

इस श्रृंखला का एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक कार्य 1953 में पूरा हुआ, जब ब्राक को पेरिस में लौवर संग्रहालय के एट्रस्कैन छत (Etruscan ceiling) के लिए तीन बड़े पैनल चित्रित करने के लिए कमीशन किया गया। उन्होंने नीले आकाश में उड़ते हुए बड़े, शैलीबद्ध पक्षियों को चित्रित किया। यह एक बड़ा सम्मान था और इसने ब्राक की स्थिति को फ्रांस के महानतम जीवित कलाकारों में से एक के रूप में स्थापित किया।

उनके अंतिम कार्य, जिनमें 'द ब्लैक बर्ड' (The Black Bird) और 'एजियर सुर सोल' (A tire d'aile - On the Wing) शामिल हैं, सादगी और गहनता की पराकाष्ठा को दर्शाते हैं। वे एक कलाकार के अंतिम चिंतन हैं जो रूप और स्थान के जीवन भर के अन्वेषण के बाद शांति और मुक्ति की भावना तक पहुँच गया है।

अन्य कला रूप: मूर्तिकला, प्रिंटमेकिंग, डिज़ाइन

हालांकि ब्राक मुख्य रूप से एक चित्रकार के रूप में जाने जाते हैं, उन्होंने अन्य कला रूपों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

- मूर्तिकला: उन्होंने 1920 के दशक से प्लास्टर, कांस्य और पत्थर में मूर्तियां बनाना शुरू किया। उनकी प्रारंभिक मूर्तियां अक्सर घनवादी सिद्धांतों को त्रि-आयामी रूप में अनुवादित करती हैं, जबकि बाद की कृतियाँ, विशेष रूप से ग्रीक पौराणिक कथाओं से प्रेरित, अधिक शास्त्रीय और प्रवाहमय हैं।
- प्रिंटमेकिंग: ब्राक एक कुशल प्रिंटमेकर थे, जिन्होंने एचिंग, वुडकट और विशेष रूप से लिथोग्राफी में काम किया। उनके प्रिंट अक्सर उनके चित्रों के समान विषयों - स्थिर जीवन, पक्षी, पौराणिक कथाएँ - का पता लगाते हैं, और वे माध्यम की विशिष्ट संभावनाओं का उपयोग करते हैं, विशेष रूप से बनावट और रेखा के संबंध में।
- पुस्तक चित्रण: उन्होंने कई कवियों और लेखकों, जैसे रेने चार (René Char) और पियरे रेवर्डी (Pierre Reverdy) के साथ मिलकर पुस्तकों का चित्रण किया।
- डिज़ाइन: उन्होंने सिरेमिक, आभूषण और यहां तक कि सना हुआ ग्लास (stained glass) के लिए भी डिज़ाइन बनाए।

इन विभिन्न माध्यमों में उनका काम उनकी निरंतर रचनात्मकता और विभिन्न सामग्रियों और तकनीकों के साथ प्रयोग करने की उनकी इच्छा को दर्शाता है।

विरासत और कला जगत पर प्रभाव

ज़ॉर्ज़ ब्राक 20वीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली कलाकारों में से एक हैं। उनकी विरासत बहुआयामी है:

- घनवाद के सह-संस्थापक: पिकासो के साथ, उन्होंने घनवाद का आविष्कार और विकास किया, एक ऐसा आंदोलन जिसने कला के पाठ्यक्रम को हमेशा के लिए बदल दिया। इसने प्रतिनिधित्व की पारंपरिक धारणाओं को तोड़ दिया और अमूर्त कला के विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

कुशाग्र जैन, ज़ॉर्ज़ ब्राक: घनवाद के सह-शिल्पी और आधुनिक कला के प्रणेता, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 27 - 35*

- पैपियर कोला के प्रणेता: चिपकी हुई सामग्री को कलाकृति में शामिल करने की उनकी अग्रणी तकनीक ने कोलाज और असेंबलेज (assemblage) के विकास को प्रेरित किया और कला और जीवन के बीच की सीमाओं पर सवाल उठाया।
- स्थिर जीवन के गुरु: ब्राक ने स्थिर जीवन शैली (still life genre) को एक नया जीवन और महत्व दिया। उन्होंने साधारण वस्तुओं को गहन ध्यान और काव्यात्मक दृष्टि का विषय बनाया।
- रूप, स्थान और बनावट के अन्वेषक: उनकी पूरी कला यात्रा रूप, स्थान और बनावट के बीच संबंधों की निरंतर खोज थी। उनकी रचनाएँ दृश्य धारणा और वास्तविकता की प्रकृति पर एक गहरा चिंतन प्रस्तुत करती हैं।
- कलाकारों पर प्रभाव: ब्राक की कला ने न केवल उनके समकालीनों को, बल्कि बाद की पीढ़ियों के कलाकारों को भी प्रभावित किया है, जिनमें जुआन ग्रिस (Juan Gris), फर्नांड लेजर (Fernand Léger) और कई अमूर्त कलाकार शामिल हैं।
- चिंतनशील आधुनिकता: पिकासो की विस्फोटक प्रतिभा के विपरीत, ब्राक ने एक अधिक शांत, व्यवस्थित और चिंतनशील प्रकार की आधुनिकता का प्रतिनिधित्व किया। उनकी कला बौद्धिक कठोरता को संवेदी अनुभव और काव्यात्मक अंतर्दृष्टि के साथ जोड़ती है।

ज़ॉर्ज़ ब्राक एक ऐसे कलाकार थे जिन्होंने निरंतर अन्वेषण, प्रयोग और आत्म-चिंतन के माध्यम से अपनी विशिष्ट कलात्मक भाषा विकसित की। फॉविज़्म के उत्साही रंगों से लेकर घनवाद की क्रांतिकारी ज्यामिति तक, और युद्ध के बाद की शांत परिपक्वता से लेकर उनके अंतिम वर्षों की काव्यात्मक पक्षी उड़ानों तक, उनकी कला यात्रा 20वीं सदी की कला के प्रमुख विकासों का दर्पण है।

घनवाद के सह-निर्माता के रूप में पिकासो के साथ उनकी साझेदारी कला इतिहास में अद्वितीय है, लेकिन ब्राक का योगदान केवल घनवाद तक ही सीमित नहीं है। उन्होंने घनवाद के बाद भी अपनी शैली को विकसित और परिष्कृत करना जारी रखा, जिससे स्थिर जीवन, परिदृश्य और रूपक चित्रों का एक समृद्ध और सुसंगत निकाय तैयार हुआ। उनकी कला हमें दुनिया को ध्यान से देखने, वस्तुओं की छिपी हुई संरचना और बनावट को महसूस करने और स्थान और समय की जटिलताओं पर विचार करने के लिए आमंत्रित करती है। ज़ॉर्ज़ ब्राक केवल एक महान नवप्रवर्तक ही नहीं थे, बल्कि एक गहरे कवि और विचारक भी थे, जिनकी कला आज भी दर्शकों को प्रेरित और प्रभावित करती है। वे वास्तव में आधुनिक कला के एक महान प्रणेता थे जिनका स्थान कला के इतिहास में स्थायी है।

कुशाग्र जैन, फ्रांज़ क्लाइन (Franz Kline): अमूर्त अभिव्यंजनावाद के एक सशक्त हस्ताक्षर, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 36-38*

फ्रांज़ क्लाइन (Franz Kline): अमूर्त अभिव्यंजनावाद के एक सशक्त हस्ताक्षर

कुशाग्र जैन

आज 13 मई है, और यह तारीख अमेरिकी चित्रकार फ्रांज़ क्लाइन के जीवन से जुड़ी एक महत्वपूर्ण स्मृति का दिन है। आज उनकी 63वीं पुण्यतिथि है।

फ्रांज़ क्लाइन (23 मई, 1910 - 13 मई, 1962) एक प्रभावशाली अमेरिकी चित्रकार थे, जिन्हें 20वीं सदी के मध्य में न्यूयॉर्क में उभरे अमूर्त अभिव्यंजनावादी (Abstract Expressionist) कला आंदोलन के प्रमुख कलाकारों में गिना जाता है। वे विशेष रूप से अपने बड़े आकार के, ऊर्जावान, और अमूर्त काले और सफेद चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं, जिनमें चौड़े ब्रश स्ट्रोक का प्रभाव स्पष्ट दिखता है।

प्रारंभिक जीवन और कला शिक्षा:

फ्रांज़ क्लाइन का जन्म विल्केस-बैरे, पेंसिल्वेनिया के कोयला-खनन क्षेत्र में हुआ था। उन्होंने कला के प्रति अपनी प्रारंभिक रुचि दिखाई और बोस्टन विश्वविद्यालय (1931-1935) तथा बाद में लंदन के हीदरली स्कूल ऑफ फाइन आर्ट (1937-1938) में चित्रकला का अध्ययन किया। उनका शुरुआती काम आलंकारिक था, जिसमें शहरी दृश्य, चित्र और उनके गृहनगर के दृश्य शामिल थे, जो अक्सर यथार्थवादी शैली में होते थे। 1938 में संयुक्त राज्य अमेरिका लौटने के बाद, वे न्यूयॉर्क शहर में बस गए।

अमूर्त कला की ओर परिवर्तन:

1940 के दशक के दौरान, क्लाइन ने आलंकारिक शैली में काम करना जारी रखा, लेकिन वे न्यूयॉर्क के उभरते हुए अवान्त-गार्डे कला परिदृश्य में तेजी से शामिल होते गए। उनकी मित्रता विलेम डी कूनिंग, जैक्सन पोलक और फिलिप गस्टन जैसे कलाकारों से हुई।

उनके करियर में एक महत्वपूर्ण मोड़ 1948 या 1949 के आसपास आया। एक प्रसिद्ध कहानी के अनुसार, क्लाइन ने अपने मित्र विलेम डी कूनिंग की मदद से, अपने छोटे स्याही रेखाचित्रों को एक बेल-ऑप्टिकॉन प्रोजेक्टर का उपयोग करके दीवार पर प्रक्षेपित किया। इन छोटे अध्ययनों को विशाल आकार में देखकर क्लाइन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने महसूस किया कि जब उनके ब्रशस्ट्रोक को उनके प्रतिनिधित्वात्मक संदर्भ से अलग करके बड़ा किया जाता है, तो उनमें निहित शक्ति और अमूर्त गुणवत्ता उभरकर सामने आती है। इस अनुभव को अक्सर बड़े पैमाने पर अमूर्तता की ओर उनके नाटकीय बदलाव के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में उद्धृत किया जाता है।

प्रसिद्ध श्वेत-श्याम काल:

1950 तक, क्लाइन ने अपनी विशिष्ट शैली विकसित कर ली थी: सफेद कैनवस पर शक्तिशाली, विशाल काले रूप टकराते और प्रतिच्छेद करते हुए। ये केवल सफेद पृष्ठभूमि पर काली पेंटिंग नहीं थीं; क्लाइन सफेद क्षेत्रों को काले स्ट्रोक जितना ही सक्रिय और महत्वपूर्ण मानते थे, जिससे एक गतिशील तनाव और आलंकारिक-पृष्ठभूमि की अस्पष्टता का भाव पैदा होता था।

इस अवधि के उनके कार्यों की विशेषताएँ:

कुशाग्र जैन, फ्रांज़ क्लाइन (Franz Kline): अमूर्त अभिव्यंजनावाद के एक सशक्त हस्ताक्षर, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 36-38*

- साहसिक संकेत (Bold Gestures): वे पेंट लगाने के लिए चौड़े हाउस पेंटर के ब्रश का इस्तेमाल करते थे, जिससे कार्यों में गति, बल और कच्ची ऊर्जा का भाव आता था।
- स्मारकीय पैमाना (Monumental Scale): उनके कैनवस अक्सर बहुत बड़े होते थे, जो दर्शक को उनके गतिशील क्षेत्रों में डुबो देते थे।
- संरचनात्मक गुणवत्ता (Structural Quality): उनकी स्पष्ट सहजता के बावजूद, क्लाइन की कई पेंटिंग्स में एक मजबूत अंतर्निहित संरचना होती है, जो अक्सर औद्योगिक रूपों, पुलों, गर्डरों और शहरी वास्तुकला की छवियों को उद्घाटित करती है - शायद उनके पेंसिल्वेनिया के पालन-पोषण और न्यूयॉर्क शहर के परिदृश्य का एक अवचेतन प्रतिबिंब।
- भावनात्मक तीव्रता (Emotional Intensity): काले और सफेद का तीव्र कंट्रास्ट, आक्रामक ब्रशवर्क के साथ मिलकर, उनकी पेंटिंग्स को एक नाटकीय और अक्सर भावनात्मक गुणवत्ता प्रदान करता था।

यद्यपि उनके कार्यों की तुलना अक्सर पूर्वी एशियाई सुलेख से की जाती है, क्लाइन स्वयं इस सीधी तुलना के बारे में कुछ हद तक अस्पष्ट थे और अपने रूपों के अमेरिकी और औद्योगिक चरित्र पर जोर देते थे।

बाद का काम और रंगों का पुनः प्रयोग:

1950 के दशक के अंत में, क्लाइन ने अपने काम में रंगों को फिर से शामिल करना शुरू किया, हालांकि उनका दृष्टिकोण संकेतात्मक और अमूर्त बना रहा। उन्होंने अपने विशिष्ट काले और सफेद के साथ जीवंत रंगों का पता लगाया, जिससे तनाव और ऊर्जा का एक नया सेट तैयार हुआ। इस अवधि के कार्य, जैसे "किंग ओलिवर" (1958) या "रेड पेंटिंग" (1961), उनकी मोनोक्रोमैटिक रचनाओं की शक्ति को एक रंगीन भाषा में अनुवादित करने की उनकी क्षमता को प्रदर्शित करते हैं। हालांकि, उनके असामयिक निधन के कारण यह रंगीन चरण छोटा रह गया।

तकनीक और प्रक्रिया:

उनकी पेंटिंग्स के सहज और तीव्र निष्पादन के बावजूद, क्लाइन की प्रक्रिया में अक्सर कई प्रारंभिक रेखाचित्र और अध्ययन शामिल होते थे। वे छोटी ड्राइंग में रचनाओं पर काम करते थे, अक्सर टेलीफोन बुक या कागज के अन्य टुकड़ों से फटे पन्नों पर, बड़े कैनवस पर उन्हें अनुवादित करने से पहले।

विरासत:

फ्रांज़ क्लाइन का 13 मई, 1962 को न्यूयॉर्क शहर में आमवाती हृदय रोग के कारण 51 वर्ष की आयु में समय से पहले निधन हो गया। अपने अपेक्षाकृत छोटे करियर में, उन्होंने खुद को अमूर्त अभिव्यंजनावादी आंदोलन के सबसे महत्वपूर्ण और मौलिक चित्रकारों में से एक के रूप में स्थापित किया। उनके साहसिक काले और सफेद अमूर्त चित्र युद्ध के बाद की अमेरिकी कला की प्रतिष्ठित छवियां बने हुए हैं।

उनके काम ने कलाकारों की बाद की पीढ़ी को प्रभावित किया और आज भी उनकी कच्ची शक्ति, संरचनात्मक अखंडता और गहरे संकेतात्मक प्रभाव के लिए उनकी सराहना की जाती है। क्लाइन की पेंटिंग्स दुनिया भर के प्रमुख संग्रहालय संग्रहों में मौजूद हैं।

कुशाग्र जैन, फ्रांज़ क्लाइन (Franz Kline): अमूर्त अभिव्यंजनावाद के एक सशक्त हस्ताक्षर, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 36-38*

आज उनकी पुण्यतिथि पर, कला जगत फ्रांज़ क्लाइन को एक ऐसे कलाकार के रूप में याद करता है, जिन्होंने एक सीमित पैलेट के साथ, विशाल शक्ति और एक विशिष्ट अमेरिकी अमूर्त दृष्टि को व्यक्त करने में कामयाबी हासिल की।

निहारिका जैन, विद्यालयों में एक्सपेरिमेंटल लैब की आवश्यकता, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 39-40*

विद्यालयों में एक्सपेरिमेंटल लैब की आवश्यकता

निहारिका जैन*

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में, विशेष रूप से विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बढ़ते महत्व के युग में, विद्यालयों में एक्सपेरिमेंटल लैब (प्रयोगात्मक प्रयोगशालाओं) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। ये केवल उपकरण और रसायनों से भरे कमरे नहीं हैं, बल्कि ये सीखने, अन्वेषण करने और ज्ञान को वास्तविक दुनिया से जोड़ने के जीवंत केंद्र हैं। इनकी आवश्यकता को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. करके सीखना (Learning by Doing):

o अवधारणाओं की स्पष्टता: प्रयोगशालाएं छात्रों को सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक रूप में देखने और अनुभव करने का अवसर प्रदान करती हैं। जब छात्र स्वयं प्रयोग करते हैं, तो जटिल और अमूर्त वैज्ञानिक अवधारणाएँ भी उनके लिए सरल और स्पष्ट हो जाती हैं। उदाहरण के लिए, रसायन विज्ञान में अम्ल-क्षार की प्रतिक्रिया को केवल पढ़ने की तुलना में उसे स्वयं करके देखना अधिक प्रभावशाली होता है।

o गहरी समझ: स्वयं प्रयोग करने से छात्रों की विषय में समझ गहरी होती है और सीखी हुई बातें लंबे समय तक याद रहती हैं।

2. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास (Development of Scientific Temper):

o जिज्ञासा और अवलोकन: प्रयोगशालाएं छात्रों में स्वाभाविक जिज्ञासा को बढ़ावा देती हैं। वे चीजों को ध्यान से देखना, प्रश्न पूछना और आलोचनात्मक ढंग से सोचना सीखते हैं।

o विश्लेषण और निष्कर्ष: प्रयोगों के दौरान छात्र डेटा एकत्र करना, उसका विश्लेषण करना और तार्किक निष्कर्ष निकालना सीखते हैं, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण का मूल आधार है।

3. कौशल विकास (Skill Development):

o व्यावहारिक कौशल: छात्र प्रयोगशाला उपकरणों का सही उपयोग करना, माप लेना, नमूनों को संभालना और विभिन्न प्रयोगात्मक तकनीकों को सीखते हैं।

o समस्या-समाधान कौशल: प्रयोग के दौरान आने वाली अप्रत्याशित चुनौतियों का सामना करने और उनका समाधान खोजने से छात्रों की समस्या-समाधान क्षमता विकसित होती है।

o सुरक्षा कौशल: प्रयोगशाला में सुरक्षा नियमों का पालन करना और रसायनों तथा उपकरणों का सुरक्षित उपयोग करना सीखते हैं, जो एक महत्वपूर्ण जीवन कौशल है।

4. सिद्धांतों का सत्यापन (Verification of Theories):

o छात्रों को कक्षा में पढ़ाए गए वैज्ञानिक नियमों और सिद्धांतों को स्वयं प्रयोगों द्वारा सत्यापित करने का मौका मिलता है। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वैज्ञानिक ज्ञान में उनकी आस्था मजबूत होती है।

5. रुचि जागृत करना और प्रेरणा (Arousing Interest and Motivation):

निहारिका जैन, विद्यालयों में एक्सपेरिमेंटल लैब की आवश्यकता, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 39-40*

o पारंपरिक कक्षा शिक्षण की तुलना में प्रयोगशाला कार्य अधिक रोचक और आकर्षक होता है। यह छात्रों की विषय में रुचि बढ़ाता है और उन्हें विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (STEM) जैसे क्षेत्रों में करियर बनाने के लिए प्रेरित कर सकता है।

o यह उन छात्रों की पहचान करने में भी मदद करता है जिनमें वैज्ञानिक अनुसंधान के प्रति स्वाभाविक झुकाव होता है।

6. सहयोगात्मक शिक्षा को बढ़ावा (Promoting Collaborative Learning):

o प्रयोगशाला में कार्य अक्सर समूहों में किया जाता है, जिससे छात्रों में टीम वर्क, संचार कौशल और एक-दूसरे से सीखने की भावना विकसित होती है।

7. रचनात्मकता और नवाचार (Creativity and Innovation):

o प्रयोगशालाएं छात्रों को अपनी रचनात्मकता का उपयोग करने और नए विचारों के साथ प्रयोग करने का अवसर प्रदान करती हैं, जिससे नवाचार की नींव पड़ती है।

8. आधुनिक शिक्षा की आवश्यकता:

o राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जैसी आधुनिक शैक्षणिक पहलें अनुभवात्मक और गतिविधि-आधारित शिक्षा पर जोर देती हैं। एक्सपेरिमेंटल लैब्स इस दृष्टिकोण को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

o यह छात्रों को तेजी से बदलती तकनीकी दुनिया और भविष्य के रोजगारों के लिए तैयार करती है।

विभिन्न प्रकार की प्रयोगशालाएं:

विद्यालयों में आमतौर पर निम्नलिखित प्रकार की प्रयोगशालाओं की आवश्यकता होती है:

• भौतिकी प्रयोगशाला (Physics Lab): यांत्रिकी, प्रकाशिकी, ऊष्मा, विद्युत और चुंबकत्व से संबंधित प्रयोगों के लिए।

• रसायन विज्ञान प्रयोगशाला (Chemistry Lab): रासायनिक अभिक्रियाओं, पदार्थों के गुणों और विश्लेषण के लिए।

• जीव विज्ञान प्रयोगशाला (Biology Lab): सूक्ष्मदर्शी का उपयोग, नमूनों का अध्ययन, शारीरिक रचना और जैविक प्रक्रियाओं को समझने के लिए।

• कंप्यूटर प्रयोगशाला (Computer Lab): डिजिटल साक्षरता, प्रोग्रामिंग और विभिन्न सॉफ्टवेयर अनुप्रयोगों को सीखने के लिए।

• गणित प्रयोगशाला (Mathematics Lab): गणितीय अवधारणाओं को मॉडल और गतिविधियों के माध्यम से समझने के लिए।

• भाषा प्रयोगशाला (Language Lab): भाषा कौशल, विशेष रूप से सुनने और बोलने के अभ्यास के लिए।

विद्यालयों में एक्सपेरिमेंटल लैब केवल एक सुविधा नहीं, बल्कि एक अनिवार्य शैक्षणिक संसाधन हैं। ये छात्रों को निष्क्रिय श्रोता से सक्रिय भागीदार और अन्वेषक के रूप में परिवर्तित करती हैं। एक मजबूत वैज्ञानिक आधार, आलोचनात्मक सोच और व्यावहारिक कौशल से युक्त नागरिकों का निर्माण करने के लिए, जो राष्ट्र की प्रगति में योगदान दे सकें, प्रत्येक विद्यालय में सुसज्जित और कार्यात्मक प्रयोगशालाओं का होना अत्यंत आवश्यक है। यह निवेश छात्रों के भविष्य और देश के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

डॉ. मंतोष यादव, उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला: सांस्कृतिक धरोहर के रूप और रंग, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 41-45*

उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला: सांस्कृतिक धरोहर के रूप और रंग

डॉ. मंतोष यादव*

उत्तराखंड, जिसे 'देवभूमि' के नाम से जाना जाता है, अपनी अद्‌वितीय सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्‌ध है। इस राज्य की लोक जनजातीय चित्रकला न केवल यहां की पारंपरिक कलात्मकता को अभिव्यक्त करती है, बल्कि जनजातीय जीवन के मूल्यों, धार्मिक आस्थाओं और प्रकृति के साथ उनके गहरे संबंध को भी दर्शाती है। उत्तराखंड के जनजातीय समाज में थारू, भोटिया, गोंड, और जौनसारी जनजातियाँ प्रमुख हैं, और उनकी चित्रकलाएँ उनके जीवन और सांस्कृतिक विविधताओं की पहचान हैं। इन चित्रकलाओं में स्थानीय जीवनशैली, धार्मिक प्रतीक, प्रकृति के तत्व, और सामूहिक परंपराएँ जीवंत रूप में प्रस्तुत की जाती हैं। थारू जनजाति की दीवार चित्रकला, जिसे अक्सर मिट्‌टी के घरों और दीवारों पर उकेरा जाता है, उनके सामाजिक और धार्मिक विश्वासों का प्रतीक होती है। भोटिया जनजाति की चित्रकला में पौराणिक कथाएँ और देवताओं का चित्रण देखने को मिलता है, जो इनकी गहरी आध्यात्मिकता का प्रतीक है। गढ़वाल और कुमाऊँ क्षेत्रों में देवी-देवताओं, प्राकृतिक दृश्यों, और पारंपरिक लोकगाथाओं पर आधारित चित्रकलाएँ भी प्रसिद्‌ध हैं। इन चित्रकलाओं में प्राकृतिक रंगों और सरल रेखाओं का उपयोग किया जाता है, जो इनके सौंदर्य को विशिष्ट बनाता है। पारंपरिक तकनीकों का पालन करते हुए, ये चित्रकला शैलियाँ पर्यावरण और सांस्कृतिक संतुलन के महत्व को भी उजागर करती हैं। उत्तराखंड की लोक जनजातीय चित्रकला केवल सौंदर्य का प्रदर्शन नहीं है, बल्कि यह उनकी पहचान, धरोहर, और अस्तित्व का प्रमाण भी है। यह कला आधुनिक समय में भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है और राज्य की सांस्कृतिक संपन्नता को संरक्षित करने में सहायक है। यह न केवल उत्तराखंड की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करती है, बल्कि देश-विदेश में इसकी लोकप्रियता भी बढ़ा रही है।

उत्तराखंड की चित्रकला: सांस्कृतिक धरोहर के रूप और रंग

गढ़वाली और कुमाऊँनी चित्रकला: ऐपन- गढ़वाली और कुमाऊँनी चित्रकला उत्तराखंड की विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है, जिसमें पारंपरिक शैली और विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकों का चित्रण किया जाता है। ऐपन, उत्तराखंड के ग्रामीण इलाकों में प्रमुख रूप से प्रचलित एक विशेष प्रकार की चित्रकला है, जिसे दीवारों, फर्शों, और अन्य सतहों पर उकेरा जाता है। ऐपन का उद्‌देश्य केवल सजावट नहीं, बल्कि यह सांस्कृतिक और धार्मिक प्रतीकों के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करना है। ऐपन, उत्तराखंड के गढ़वाल और कुमाऊं क्षेत्रों में विशेष रूप से घरों और मंदिरों की दीवारों और फर्शों पर बनाया जाता है। इसे आमतौर पर विवाह, तीज, और अन्य धार्मिक अवसरों पर चित्रित किया जाता है। ऐपन का मुख्य उद्‌देश्य सौंदर्य और शांति के साथ-साथ सकारात्मक ऊर्जा का संचार करना होता है। यह कला विशेष रूप से महिलाओं द्‌वारा की जाती है, जो अपनी कला के माध्यम से समाज में शांति और समृद्‌धि की कामना करती हैं।

सामग्री और विधि- ऐपन चित्रकला में उपयोग की जाने वाली सामग्री साधारण और प्राकृतिक होती है। इनमें प्रमुख रूप से हल्दी (पारंपरिक पीला रंग) और चूना (सफेद रंग) का प्रयोग होता

डॉ. मंतोष यादव, उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला: सांस्कृतिक धरोहर के रूप और रंग, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 41-45*

है। सिंदूर और चाक का उपयोग भी रंग बनाने में किया जाता है। प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल किया जाता है जैसे मिट्टी, पौधों से प्राप्त रंग और खनिजों से तैयार रंग। जड़ी-बूटियाँ और वनस्पतियाँ कुछ ऐपन चित्रकलाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

विधि: ऐपन चित्रकला की विधि बहुत ही साधारण होती है, जो हाथों और विभिन्न साधनों का प्रयोग करती है। यह चित्रकला पारंपरिक रूप से दीवारों, फर्शों, और लकड़ी की सतहों पर बनाई जाती है। ऐपन की प्रक्रिया में प्रमुख रूप से निम्नलिखित चरण होते हैं:

सतह तैयार करना: सबसे पहले दीवार या फर्श को अच्छी तरह से साफ किया जाता है और फिर उसे चिकना किया जाता है।

रंगों का मिश्रण: प्राकृतिक रंगों को पानी के साथ मिलाकर चित्रकला के लिए उपयुक्त गाढ़ा पेस्ट तैयार किया जाता है।

रचनात्मक डिजाइन: चित्रकला में सामान्यतः सरल और संरचित डिजाइन होते हैं, जैसे मंडल, फूल, पत्तियाँ, और अन्य धार्मिक प्रतीक। इन डिजाइन को हाथों या एक सरल उपकरण का उपयोग करके उकेरा जाता है।

रंग भरना: डिजाइनों में रंग भरने के लिए पारंपरिक रंगों का उपयोग किया जाता है। यह रंग साधारण रूप से हाथ से या छोटे ब्रश से भरे जाते हैं।

विषय (Subject)- ऐपन चित्रकला में धार्मिक प्रतीकों और देवी-देवताओं का चित्रण प्रमुख होता है। देवी लक्ष्मी, गणेश, सूर्य, चंद्रमा, और विभिन्न देवी-देवताओं के चित्र ऐपन में प्रमुख रूप से देखे जाते हैं। ऐपन में अक्सर प्राकृतिक दृश्य, जैसे फूल, पत्तियाँ, फल, और पेड़, चित्रित किए जाते हैं, जो जीवन के शुद्धता और समृद्धि को दर्शाते हैं। ऐपन चित्रकला का प्रमुख उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नति और सकारात्मक ऊर्जा का संचार करना होता है। इसके लिए विशेष प्रतीकों जैसे स्वास्तिक, त्रिशूल, और अन्य धार्मिक संकेतों का उपयोग किया जाता है। ऐपन चित्रकला समाज और संस्कृति से संबंधित चित्रण भी करती है, जैसे विवाह समारोह, लोक त्योहार, और अन्य पारंपरिक गतिविधियाँ। गढ़वाली और कुमाऊँनी चित्रकला, विशेष रूप से ऐपन, उत्तराखंड की सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा है। यह कला न केवल सौंदर्यपूर्ण होती है, बल्कि यह धार्मिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक संदेश भी देती है। ऐपन की सरलता, पारंपरिकता, और सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से यह कला उत्तराखंड के ग्रामीण जीवन की गहरी समझ और धार्मिक आस्थाओं को व्यक्त करती है।

प्रमुख लोक जनजातीय चित्रकला शैलियाँ:

थारू जनजाति चित्रकला- थारू जनजाति उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र में मुख्य रूप से निवास करती है। यह जनजाति अपनी सांस्कृतिक धरोहर, जीवनशैली और कला के लिए प्रसिद्ध है। थारू जनजाति की चित्रकला मुख्य रूप से उनकी धार्मिक, सामाजिक और पारंपरिक जीवनशैली का प्रदर्शन करती है। यह चित्रकला विशेष रूप से दीवारों, लकड़ी, कागज, और कपड़े पर उकेरी जाती है और इनका उद्देश्य सामाजिक घटनाओं, धार्मिक विश्वासों, और प्राकृतिक दृश्यों को चित्रित करना होता है। थारू जनजाति की चित्रकला में गहरी सांस्कृतिक और धार्मिक छाप है, जो उन्हें अपने लोक जीवन से जोड़ती है। थारू कला में रंग, रूप, और पैटर्न का प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है, और यह चित्रकला उनके पारंपरिक आचार-व्यवहार, लोककथाएँ, और देवताओं की पूजा से प्रेरित होती है। थारू चित्रकला की विशेषताएँ इसकी सरलता और गहरी भावना से जुड़ी होती हैं, जो इसके गहरे सामाजिक और धार्मिक संदर्भ को स्पष्ट करती हैं।

डॉ. मंतोष यादव, उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला: सांस्कृतिक धरोहर के रूप और रंग, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 41-45*

सामग्री और विधि:

थारू जनजाति की चित्रकला में उपयोग की जाने वाली सामग्री पारंपरिक और प्राकृतिक होती है। इस कला में आमतौर पर मिट्टी, रंगीन पाउडर, लकड़ी, और अन्य प्राकृतिक स्रोतों का उपयोग किया जाता है।

प्राकृतिक रंग- थारू चित्रकला में अक्सर मिट्टी, रेज़िन, वनस्पति से प्राप्त रंग, और खनिजों से बने रंगों का प्रयोग किया जाता है। यह रंग दीवारों, लकड़ी या कपड़े पर चित्रित किए जाते हैं। लकड़ी: चित्रकला में लकड़ी की सतह पर उकेरी गई छवियाँ देखी जाती हैं, जो ठोस और स्थायित्व प्रदान करती हैं। कागज और कपड़ा: कभी-कभी चित्रकला के लिए कागज और कपड़े का भी इस्तेमाल किया जाता है, जो कला को लचीला और बहुमुखी बनाता है।

उकेरना और चित्रित करना: थारू चित्रकला में मुख्य विधि उकेरने और चित्रित करने की होती है। दीवारों पर चित्रकला उकेरी जाती है, जबकि लकड़ी और अन्य सामग्रियों पर पेंटिंग की जाती है। चित्रकला में विभिन्न चित्र और प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। स्वाभाविक पैटर्न: थारू चित्रकला में प्राकृतिक पैटर्न, जैसे पत्तियाँ, फूल, और अन्य प्राकृतिक रूपों का चित्रण किया जाता है। ये पैटर्न कलाकार की कल्पना और प्रकृति के साथ गहरे जुड़ाव को दर्शाते हैं। विभिन्न रूपों का प्रयोग: इस चित्रकला में ज्यादातर रूपांकन का प्रयोग किया जाता है, जिसमें देवताओं, सामाजिक घटनाओं, और अन्य धार्मिक प्रतीकों का चित्रण होता है।

विषय:- थारू जनजाति की चित्रकला के विषय मुख्य रूप से उनके धार्मिक विश्वासों, जीवनशैली, और प्रकृति से संबंधित होते हैं। इन विषयों में विशेष रूप से निम्नलिखित शामिल होते हैं- थारू कला में धार्मिक चित्रण प्रमुख स्थान रखता है। इसमें देवताओं और देवी-देवताओं की छवियाँ, पूजा की विधियाँ, और पारंपरिक अनुष्ठान शामिल होते हैं। यह चित्रकला थारू समाज की आध्यात्मिकता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती है। थारू चित्रकला में प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण भी अत्यधिक किया जाता है, जिसमें जंगल, नदियाँ, पर्वत, और अन्य प्राकृतिक तत्व प्रमुख होते हैं। ये चित्रकला उनके ग्रामीण जीवन और प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति गहरी श्रद्धा को दर्शाते हैं। थारू चित्रकला में उनकी सामाजिक जीवनशैली, पारंपरिक रीति-रिवाज, और अनुष्ठानों का भी चित्रण होता है। इसमें विवाह, खेती, और अन्य सांस्कृतिक परंपराओं के दृश्य शामिल होते हैं।

थारू चित्रकला में लोककथाएँ, मिथक और पारंपरिक कथाएँ चित्रित की जाती हैं। ये चित्रकला रूप में धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण होते हैं, और उनकी पहचान को संरक्षित करते हैं। थारू जनजाति की चित्रकला न केवल कला के रूप में बल्कि समाज और संस्कृति के एक अभिन्न अंग के रूप में भी महत्वपूर्ण है। यह कला थारू समाज की जीवनशैली, धर्म, और सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने का एक प्रभावी साधन है।

भोटिया जनजाति की चित्रकला-

उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों में बसी भोटिया जनजाति अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। इनकी चित्रकला एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जो इस जनजाति की जीवनशैली, विश्वासों, और पारंपरिक

डॉ. मंतोष यादव, उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला: सांस्कृतिक धरोहर के रूप और रंग, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 41-45*

कथाओं को दर्शाती है। भोटिया जनजाति की चित्रकला न केवल उनके धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन को अभिव्यक्त करती है, बल्कि यह पहाड़ी जीवन की कठिनाइयों और सौंदर्य को भी उजागर करती है। भोटिया जनजाति के चित्रकला रूप में स्वाभाविकता, सरलता और प्रकृति के प्रति गहरी संवेदनशीलता पाई जाती है।

सामग्री और विधि:

भोटिया जनजाति की चित्रकला में प्रयुक्त सामग्री और विधियाँ अद्‌वितीय और पारंपरिक होती हैं। इन चित्रों में प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल होता है, जो स्थानीय पौधों, खनिजों, और अन्य प्राकृतिक संसाधनों से तैयार किए जाते हैं। रंग बनाने के लिए भोटिया कलाकार मिट्‌टी, गहरे लाल और पीले रंग के खनिज, और वनस्पति से रंग निकालते हैं। इन रंगों को दीवारों, लकड़ी की सतहों, और कपड़ों पर इस्तेमाल किया जाता है।

चित्रकला की विधि भी पारंपरिक होती है, जिसमें हाथों से चित्रित करने की तकनीक का प्रयोग किया जाता है। भोटिया जनजाति के कलाकार अपनी कलाओं को दीवारों पर उकेरते हैं, खासकर घरों, पूजा स्थलों, और मंदिरों में। वे अपनी कला में प्राकृतिक रंगों के अलावा, स्वदेशी ब्रश, लकड़ी की छड़ी, और अन्य साधारण उपकरणों का उपयोग करते हैं।

विषय- भोटिया जनजाति की चित्रकला का मुख्य विषय उनका धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन है। चित्रों में देवी-देवताओं, प्राकृतिक दृश्यों, पर्वतों, नदियों, और अन्य धार्मिक प्रतीकों का चित्रण होता है। ये चित्र न केवल कला का रूप होते हैं, बल्कि सामाजिक और धार्मिक रीति-रिवाजों का भी अभिव्यक्त करते हैं। इन चित्रों में स्थानीय परंपराओं, मिथकों, और किंवदंतियों को चित्रित किया जाता है, जो इस जनजाति की जीवनशैली और विश्वासों को प्रकट करते हैं। इसके अलावा, भोटिया जनजाति की चित्रकला में उनकी प्रमुख घटनाओं, जैसे विवाह, उत्सव, और युद्‌ध के दृश्य भी देखने को मिलते हैं। इन चित्रों में जीवन के सुख-दुःख और संघर्षों को दर्शाया जाता है, जो उनके समाज के अनुभवों और वास्तविकताओं को प्रतिविंबित करते हैं। भोटिया जनजाति की चित्रकला उनके जीवन के अभिन्न हिस्से के रूप में संरक्षित रहती है और यह उनकी सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बन चुकी है।

उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला एक सांस्कृतिक धरोहर

"उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला: सांस्कृतिक धरोहर के रूप और रंग" विषय पर आधारित इस अध्ययन में यह स्पष्ट होता है कि उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला न केवल एक कला रूप है, बल्कि यह राज्य की सांस्कृतिक धरोहर का अहम हिस्सा है। इन चित्रकलाओं में स्थानीय जीवन, प्रकृति, धार्मिक विश्वास और पारंपरिक कथाओं की गहरी छाप देखी जाती है, जो न केवल एक दृश्य अनुभव प्रदान करती है, बल्कि समाज की आत्मा को भी व्यक्त करती है। इन चित्रकलाओं के रूप और रंग में स्थानिक विविधताएँ हैं, जो प्रत्येक जनजातीय समुदाय की विशिष्टता को दर्शाती हैं। चित्रकला की यह विधा सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भों में गहरी समझ का प्रतीक है, और यह पीढ़ियों से चली आ रही पारंपरिक शिल्पकला का संरक्षण करती है। हालांकि, आधुनिकता और वैश्वीकरण के प्रभावों से ये चित्रकलाएँ कुछ हद तक विलीन हो रही हैं, फिर भी इन्हें संरक्षित करने और बढ़ावा देने के प्रयास समाज में जागरूकता बढ़ा रहे हैं। इस अध्ययन से यह भी साबित होता है कि जनजातीय चित्रकला को समझने और संरक्षित करने के लिए और अधिक शोध और सांस्कृतिक समर्थन की आवश्यकता है, ताकि यह आने वाली पीढ़ियों तक जीवित रहे।

उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला: आधुनिक स्वरूप एवं भविष्य की आशा और चुनौतियाँ-

डॉ. मंतोष यादव, उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला: सांस्कृतिक धरोहर के रूप और रंग, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 41-45*

उत्तराखंड की जनजातीय चित्रकला, जो सदियों पुरानी परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहरों का हिस्सा रही है, आज एक नये दौर से गुजर रही है। इस कला में प्रकृति, देवी-देवता, और जनजीवन की अभिव्यक्ति को रंगों और रूपों के माध्यम से दर्शाया जाता है। पारंपरिक चित्रकला में बांस, लकड़ी, और कागज का उपयोग होता था, लेकिन अब आधुनिक सामग्री और तकनीकों का समावेश होने से इसके स्वरूप में बदलाव आया है। कलाकार अब कैनवास, एक्रेलिक रंग, और अन्य आधुनिक सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे यह कला अधिक विविध और समकालीन बन गई है। भविष्य में, इस कला को बढ़ावा देने और संरक्षित करने की बड़ी चुनौतियाँ हैं। डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव से इस कला को वैश्विक स्तर पर पहचान मिल सकती है, लेकिन साथ ही इसके पारंपरिक रूप की संरक्षा भी आवश्यक है। सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा इस कला के प्रचार-प्रसार के प्रयासों के बावजूद, जनजातीय कलाकारों को आधुनिक बाजार में अपनी पहचान बनाने में कठिनाइयाँ आ रही हैं। भविष्य में, इस कला का समावेश शिक्षा और कला के अन्य क्षेत्रों में होने से इसके अस्तित्व को सुरक्षित रखा जा सकता है, जिससे नई पीढ़ी इस अनमोल धरोहर को संजोए रखेगी।

कुशाग्र जैन, समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका: एक आलोचनात्मक अध्ययन, कला समीक्षा, खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 46-49*

समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका: एक आलोचनात्मक अध्ययन

कुशाग्र जैन*

समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे न केवल कला के मूल्यांकन में सहायक होते हैं, बल्कि कला के विकास, प्रचार और समाज में उसकी स्वीकार्यता में भी महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। इस शोधपत्र का उद्देश्य समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका का आलोचनात्मक अध्ययन करना है।

महत्वपूर्ण शब्द (Keywords) - समकालीन भारतीय कला, कला समीक्षा, कला समीक्षक, सांस्कृतिक विमर्श, आलोचनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

समकालीन भारतीय कला का परिदृश्य बहुआयामी, जटिल और विविधता से परिपूर्ण है। आज़ादी के बाद भारत में जिस प्रकार राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों की बयार बहनी शुरू हुई, उसी गति से कला के क्षेत्र में भी व्यापक बदलाव दृष्टिगोचर हुए। इस बदलते हुए परिप्रेक्ष्य में कला समीक्षक एक सेतु के रूप में उभरे हैं–कलाकार, कृति और समाज के मध्य संवाद स्थापित करते हुए। वे न केवल कला को देखने और समझने की दृष्टि प्रदान करते हैं, बल्कि उसे ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक सन्दर्भों में स्थान देने का कार्य भी करते हैं। यह शोधपत्र समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिसमें उनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रमुख योगदान, समकालीन चुनौतियाँ और संभावनाओं का विवेचन किया गया है।

1. समकालीन भारतीय कला का परिप्रेक्ष्य भारत में समकालीन कला की शुरुआत बीसवीं सदी के मध्य में उस समय हुई, जब देश नवजागरण और स्वतंत्रता के आंदोलनों के प्रभाव से गुज़र रहा था। यह वह समय था जब कलाकारों ने पारंपरिक रूपों से बाहर निकलकर व्यक्तिगत अभिव्यक्ति, सामाजिक यथार्थ और वैश्विक कलात्मक प्रवृत्तियों की ओर रुख किया। इस दौर में प्रगतिशील कलाकार समूह (Progressive Artists' Group) की स्थापना, ललित कला अकादमी की भूमिका, और भारतीय आधुनिकता का विमर्श अहम रहे।

समकालीन कला न केवल शिल्प और शैली में नवीनता लाती है, बल्कि वह विचार और विमर्श के स्तर पर भी नए प्रश्न उठाती है–जैसे पहचान, पितृसत्ता, उपनिवेशवाद, पर्यावरण, और बहुसंस्कृतिवाद। इन सबका विश्लेषण करने और उसे दर्शकों तक अर्थपूर्ण रूप में पहुँचाने का कार्य एक सजग कला समीक्षक ही कर सकता है।

ऐसे परिवेश में रिचर्ड बार्थोलोम्यू, आनंद के. कुमारस्वामी, गीता कपूर, केशव मलिक, जे. स्वामीनाथन, यशोधरा डालमिया जैसे समीक्षकों ने न केवल कलाओं की समीक्षा की, बल्कि उनके पीछे छिपे ऐतिहासिक, दार्शनिक और सामाजिक आयामों को भी उद्घाटित किया।

कला समीक्षकों की भूमिका

कुशाग्र जैन, समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका: एक आलोचनात्मक अध्ययन, कला समीक्षा, खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 46-49*

समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका बहुआयामी और अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे न केवल कृतियों का विश्लेषण करते हैं, बल्कि उनके संदर्भ, महत्व, और प्रभाव को भी स्पष्ट करते हैं। इस प्रक्रिया में वे कलाकार, दर्शक, गैलरी, अकादमिक जगत और समाज के मध्य एक विचारशील मध्यस्थ की भूमिका निभाते हैं।

2.1 कला के मूल्यांकन में

कला समीक्षक किसी भी कृति को केवल दृश्य रूप में नहीं देखते, वे उसके भीतर अंतर्निहित प्रतीकों, तकनीकी पहलुओं, विषय-वस्तु, और ऐतिहासिक-सांस्कृतिक संदर्भों की परतों को उघाड़ते हैं। उदाहरणस्वरूप, अगर एक चित्र में लोक तत्वों का प्रयोग हुआ है, तो समीक्षक उस चित्र को केवल एक रूप या शैली के स्तर पर नहीं देखता, बल्कि यह भी जानने की कोशिश करता है कि उस लोक प्रतीक का समकालीन अर्थ क्या है। इस प्रकार समीक्षक दर्शकों को केवल सौंदर्य ही नहीं, बल्कि वैचारिक गहराई का अनुभव भी कराता है।

गीता कपूर के लेखन में यह गुणवत्ता स्पष्ट दिखाई देती है। उन्होंने भारतीय कला को वैश्विक संदर्भ में देखते हुए उसकी विशिष्टताओं को रेखांकित किया और उसके भीतर के सामाजिक-राजनीतिक प्रश्नों को भी उभारा। उनकी समीक्षा न केवल व्याख्यात्मक होती है, बल्कि वह विचारोत्तेजक भी होती है, जिससे पाठक की आलोचनात्मक दृष्टि विकसित होती है।

2.2 कला के प्रचार में

आज के वैश्वीकरण और डिजिटल युग में, जहाँ कला का उत्पादन और उपभोग दोनों बदल रहे हैं, कला समीक्षक कला के प्रचारक भी बन गए हैं। वे कृतियों की समीक्षा को पत्र-पत्रिकाओं, जर्नल्स, ब्लॉग्स, ऑनलाइन पोर्टल्स और सोशल मीडिया पर साझा करते हैं, जिससे कला व्यापक समुदाय तक पहुँचती है।

केशव मलिक की लेखनी, जो दशकों तक अंग्रेज़ी और हिन्दी दोनों भाषाओं में प्रकाशित होती रही, इस भूमिका का अच्छा उदाहरण है। उनकी समीक्षाओं ने नई पीढ़ी के कलाकारों को मंच प्रदान किया, साथ ही दर्शकों को उनके कार्यों की गहराई से समझ दी।

2.3 कला के विकास में

कला समीक्षक न केवल वर्तमान प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते हैं, बल्कि भविष्य की संभावनाओं को भी इंगित करते हैं। वे यह पहचानते हैं कि कौन से कलाकार नवीन प्रयोग कर रहे हैं, किस कृति में नवाचार की संभावना है, और किन विषयों पर समकालीन कलाकार गंभीर विमर्श कर रहे हैं।

समीक्षक कलाकारों को न केवल आलोचना द्वारा परिष्कृत करते हैं, बल्कि उन्हें वैचारिक आधार और आत्ममंथन के लिए भी प्रेरित करते हैं। इस संदर्भ में जे. स्वामीनाथन की भूमिका स्मरणीय है, जिन्होंने न केवल स्वयं कला में गहन कार्य किया, बल्कि समीक्षा के माध्यम से जनजातीय और लोक कलाकारों के सृजन को भी समकालीन विमर्श में शामिल किया।

3. समकालीन कला समीक्षकों की चुनौतियाँ

यद्यपि समकालीन भारतीय कला समीक्षकों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है, फिर भी उन्हें अनेक जटिल और यथार्थवादी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये चुनौतियाँ केवल कार्यक्षेत्र की सीमाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि भाषायी, आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी स्तर पर भी दृष्टिगोचर होती हैं।

3.1 भाषायी असमानता और पहुँच की समस्या

कुशाग्र जैन, समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका: एक आलोचनात्मक अध्ययन, कला समीक्षा, खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 46-49*

भारतीय कला आलोचना का एक बड़ा हिस्सा अंग्रेज़ी भाषा में केंद्रित रहा है, जिससे गैर-अंग्रेज़ी भाषी कलाकारों और दर्शकों तक समीक्षा की पहुँच सीमित हो जाती है। हिन्दी, बंगला, मराठी, तमिल, और अन्य भारतीय भाषाओं में समीक्षकों की संख्या कम है, और उनके लेखन को वैसी प्रतिष्ठा या मंच नहीं मिल पाता। इस कारण भारत की बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक कलाजगत की विविधता समीक्षा में समुचित रूप से नहीं आ पाती।

3.2 बाजारवाद और गैलरी संस्कृति का प्रभाव

आजकल कला बाजार के बढ़ते प्रभाव ने समीक्षकों की स्वतंत्रता को प्रभावित किया है। कई बार समीक्षाएँ प्रायोजित या पक्षपातपूर्ण हो जाती हैं, जिससे समीक्षा की विश्वसनीयता और आलोचनात्मक गहराई कम होती है। गैलरी, संग्रहकर्ता और आयोजक समीक्षकों पर अप्रत्यक्ष दबाव डालते हैं कि वे केवल सकारात्मक टिप्पणियाँ करें, जिससे वस्तुनिष्ठ आलोचना की गुंजाइश सीमित हो जाती है।

3.3 डिजिटल माध्यम और तात्कालिकता का दबाव

सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफार्मों पर कला समीक्षा त्वरित, सतही और प्रतिक्रियात्मक होती जा रही है। 'लाइक्स', 'शेयर' और 'फॉलोअर्स' की संस्कृति ने गंभीर आलोचना को हाशिये पर धकेल दिया है। परिणामस्वरूप, युवा समीक्षक गहन अध्ययन और आलोचनात्मक पद्धतियों से दूर होते जा रहे हैं।

3.4 अकादमिक प्रशिक्षण और शोध की कमी

भारत में कला समीक्षा को एक अकादमिक अनुशासन के रूप में अभी तक पूर्ण मान्यता नहीं मिली है। विश्वविद्यालयों में कला आलोचना पर केंद्रित पाठ्यक्रम या शोध परियोजनाओं की संख्या नगण्य है। इससे समीक्षकों की एक नई पीढ़ी तैयार करने में कठिनाई आती है और आलोचना का स्तर प्रायः अनुभवजन्य सीमाओं में ही सिमटा रहता है।

निष्कर्ष

समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका केवल एक निरीक्षक की नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक, संरक्षक और विचारक की है। वे न केवल कलाकृतियों की व्याख्या करते हैं, बल्कि कला के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रभावों को भी सामने लाते हैं। उनकी समीक्षाएँ दर्शकों को केवल जानकारी नहीं देतीं, बल्कि उन्हें एक दृष्टिकोण प्रदान करती हैं, जिससे वे कला को एक सजीव और संवेदनशील अनुभव के रूप में ग्रहण कर सकें।

भले ही समीक्षकों को भाषायी सीमाओं, बाजारवाद, डिजिटल तात्कालिकता और अकादमिक अभाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, फिर भी उनका कार्य भारतीय कला को समृद्ध और जीवंत बनाए रखने में अविस्मरणीय योगदान देता है। भविष्य में यदि इन चुनौतियों का समाधान किया जाए, तो कला समीक्षा और अधिक प्रभावशाली, समावेशी और जनोन्मुख हो सकती है।

5. संदर्भ

1. लोढा, स्वाति, और राठौड़, मदन सिंह. "समसामयिक कला प्रवृत्तियाँ और कला समीक्षा." Apni Maati, 2024.

2. "भारतीय कला जगत की समीक्षा." Samta Marg, 2024.

कुशाग्र जैन, समकालीन भारतीय कला में कला समीक्षकों की भूमिका: एक आलोचनात्मक अध्ययन, कला समीक्षा, खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 46-49*

3. राठी, डॉ. नीलम. "समकालीन हिन्दी आलोचना का परिदृश्य." ResearchGate, नवम्बर 2023.

4. Kapoor, Geeta. "When was Modernism: Essays on Contemporary Cultural Practice in India." Tulika Books, 2000.

5. Bartholomew, Richard. "The Art Critic: Writings from the Margins, 1953-87." Tulika Books, 2012.

6. Dalmia, Yashodhara. "Indian Contemporary Art: Post Independence Era." Marg Publications, 2019.

7. Swaminathan, J. "The Perceiving Fingers." Lalit Kala Akademi, 1977.

रश्मि गौतम, शिक्षा में विश्वविद्यालयी अंतःक्षेप एवं अनुसंधान की महत्ता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, कला समीक्षा, खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 50-55

शिक्षा में विश्वविद्यालयी अंतःक्षेप एवं अनुसंधान की महत्ता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

रश्मि गौतम*

सारांश (Abstract): प्रस्तुत शोध आलेख कला शिक्षा की अवधारणा, इसके बहुआयामी स्वरूप तथा इसके विकास में विश्वविद्यालयों की महती भूमिका का विश्लेषण करता है। यह लेख इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि कला शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर शोध और नवाचार क्यों आवश्यक हैं तथा यह किस प्रकार कलात्मक अभिव्यक्तियों, शैक्षणिक पद्धतियों और सांस्कृतिक विमर्श को समृद्ध कर सकता है। कला शिक्षा केवल कौशल विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सृजनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, सांस्कृतिक बोध और मानवीय मूल्यों का संवर्धन करती है। विश्वविद्यालय कला शिक्षा के लिए आवश्यक ढाँचा, संसाधन, विशेषज्ञता और एक प्रगतिशील वातावरण प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, कला शिक्षा में शोध नए ज्ञान का सृजन करता है, पारंपरिक कलाओं का संरक्षण करता है, समकालीन चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करता है और नीतियों के निर्माण में सहायक होता है। इस आलेख में इन सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई है।

मुख्य शब्द (Keywords): कला शिक्षा, विश्वविद्यालय, शोध, सृजनात्मकता, पाठ्यक्रम, कलात्मक विकास, शैक्षणिक अनुसंधान, सांस्कृतिक विरासत, नवाचार, भारतीय कला।

1. प्रस्तावना

कला मानव सभ्यता का अभिन्न अंग रही है। यह न केवल सौंदर्य और आनंद का स्रोत है, बल्कि यह विचारों, भावनाओं, संस्कृतियों और इतिहास को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम भी है। एक सुसंस्कृत समाज के निर्माण में कला की भूमिका निर्विवाद है। इसी संदर्भ में, कला शिक्षा का महत्व और भी बढ़ जाता है। कला शिक्षा व्यक्तियों में सृजनात्मक क्षमता का विकास करती है, उन्हें अपने परिवेश को समझने और उस पर प्रतिक्रिया देने की दृष्टि प्रदान करती है, तथा मानवीय संवेदनाओं को पोषित करती है।

आधुनिक युग में, जहाँ तकनीकी विकास और आर्थिक प्रगति पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित है, कला शिक्षा की प्रासंगिकता को समझना और उसे बढ़ावा देना और भी आवश्यक हो गया है। इसमें विश्वविद्यालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय न केवल कला के विभिन्न अनुशासनों में औपचारिक प्रशिक्षण प्रदान करते हैं, बल्कि वे एक ऐसा बौद्धिक और सृजनात्मक वातावरण भी निर्मित करते हैं जहाँ कला पर गंभीर चिंतन, विमर्श और शोध संभव हो पाता है।

कला शिक्षा को जीवंत और प्रासंगिक बनाए रखने के लिए शोध एक अनिवार्य उपकरण है। शोध के माध्यम से हम कला शिक्षा की नवीन पद्धतियों का विकास कर सकते हैं, कला के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभावों का अध्ययन कर सकते हैं, और कला के ऐतिहासिक तथा समकालीन संदर्भों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। प्रस्तुत शोध आलेख इन्हीं तीन प्रमुख स्तंभों - कला शिक्षा, विश्वविद्यालयों का योगदान, और शोध की महत्ता - के अंतर्संबंधों का गहन विश्लेषण करने का प्रयास करेगा। विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में, जहाँ कला की एक समृद्ध और विविध विरासत विद्यमान है, इन पहलुओं पर विचार करना अत्यंत प्रासंगिक है।

2. कला शिक्षा: अवधारणा एवं स्वरूप

रश्मि गौतम, शिक्षा में विश्वविद्यालयी अंतःक्षेप एवं अनुसंधान की महता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, कला समीक्षा, खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 50-55

कला शिक्षा एक व्यापक अवधारणा है जिसमें दृश्य कला (चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला), प्रदर्शन कला (संगीत, नृत्य, नाटक), साहित्यिक कला और अन्य सृजनात्मक अभिव्यक्तियों का शिक्षण-प्रशिक्षण सम्मिलित है। यह केवल कलाकृतियों के निर्माण या प्रदर्शन के तकनीकी कौशल सिखाने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य व्यक्ति के समग्र विकास में योगदान करना है।

कला शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य:

- सृजनात्मकता का विकास: विद्यार्थियों में मौलिक सोच, कल्पनाशीलता और नवाचार की क्षमता को बढ़ावा देना।
- आलोचनात्मक चिंतन: कलाकृतियों और कलात्मक प्रक्रियाओं का विश्लेषण, व्याख्या और मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करना।
- सौंदर्यपरक संवेदनशीलता: सौंदर्य को पहचानने, उसकी सराहना करने और अपने जीवन में उसे स्थान देने की प्रवृत्ति जागृत करना।
- सांस्कृतिक बोध: अपनी और अन्य संस्कृतियों की कलात्मक परंपराओं को समझना और उनका सम्मान करना।
- आत्म-अभिव्यक्ति: विद्यार्थियों को कला के माध्यम से अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करना।
- तकनीकी कौशल: कला के विभिन्न माध्यमों और तकनीकों में दक्षता प्रदान करना।
- सामाजिक और भावनात्मक विकास: कला के माध्यम से सहयोग, सहानुभूति और संप्रेषण कौशल का विकास।

कला शिक्षा का स्वरूप औपचारिक (स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों में) और अनौपचारिक (सामुदायिक कला केंद्रों, कार्यशालाओं, गुरु-शिष्य परंपरा में) दोनों हो सकता है। समकालीन कला शिक्षा में अंतःविषयक दृष्टिकोण को भी महत्व दिया जा रहा है, जहाँ कला को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, मानविकी और सामाजिक विज्ञान जैसे अन्य विषयों के साथ जोड़ा जाता है।

भारत जैसे देश में, जहाँ लोक कलाओं, शास्त्रीय कलाओं और जनजातीय कलाओं की एक विशाल संपदा है, कला शिक्षा की भूमिका इन परंपराओं के संरक्षण, संवर्धन और उन्हें समकालीन संदर्भों में पुनर्जीवित करने में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

3. कला शिक्षा में विश्वविद्यालयों की भूमिका

विश्वविद्यालय कला शिक्षा के औपचारिक और उच्च स्तरीय विकास के प्रमुख केंद्र होते हैं। वे न केवल कलाकारों और कला शिक्षकों को प्रशिक्षित करते हैं, बल्कि कला के क्षेत्र में ज्ञान सृजन और प्रसार में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

विश्वविद्यालयों के प्रमुख योगदान:

- पाठ्यक्रम विकास एवं कार्यान्वयन: विश्वविद्यालय कला के विभिन्न अनुशासनों में स्नातक, परास्नातक और डॉक्टरेट स्तर के पाठ्यक्रम संचालित करते हैं। ये पाठ्यक्रम सिद्धांत, इतिहास, आलोचना,

रश्मि गौतम, शिक्षा में विश्वविद्यालयी अंतःक्षेप एवं अनुसंधान की महता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, कला समीक्षा, खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 50-55

अभ्यास और शोध का संतुलित मिश्रण प्रस्तुत करते हैं। समय-समय पर पाठ्यक्रम को अद्यतन करना और समकालीन प्रवृत्तियों को शामिल करना विश्वविद्यालयों की जिम्मेदारी है।

- संकाय और विशेषज्ञता: विश्वविद्यालय कला के क्षेत्र में विशेषज्ञ और अनुभवी संकाय सदस्यों की नियुक्ति करते हैं। इनमें प्रतिष्ठित कलाकार, कला इतिहासकार, कला समीक्षक और शोधकर्ता शामिल होते हैं। अतिथि व्याख्यान, कार्यशालाएं और कलाकार-इन-रेजिडेंस कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं।
- संसाधन और बुनियादी ढाँचा: कला शिक्षा के लिए विशेष संसाधनों की आवश्यकता होती है, जैसे कि स्टूडियो, कार्यशालाएं, कला दीर्घाएं, संग्रहालय, पुस्तकालय (कला संबंधी पुस्तकों और पत्रिकाओं से समृद्ध), ऑडियो-विजुअल उपकरण और डिजिटल लैब। विश्वविद्यालय इन सुविधाओं को उपलब्ध कराने का प्रयास करते हैं।
- सृजनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा: विश्वविद्यालय एक ऐसा मुक्त और प्रेरक वातावरण प्रदान करते हैं जहाँ विद्यार्थी बिना किसी भय के प्रयोग कर सकें, प्रश्न पूछ सकें और अपनी मौलिक सृजनात्मकता को अभिव्यक्त कर सकें। आलोचनात्मक विमर्श और प्रतिक्रिया को प्रोत्साहित किया जाता है।
- अंतःविषय अध्ययन को प्रोत्साहन: आधुनिक विश्वविद्यालय कला को अन्य विषयों के साथ जोड़ने पर बल दे रहे हैं। इससे विद्यार्थियों को एक व्यापक दृष्टिकोण मिलता है और वे कला की भूमिका को विभिन्न संदर्भों में समझ पाते हैं। उदाहरण के लिए, आर्ट एंड टेक्नोलॉजी, आर्ट थेरेपी, कल्चरल स्टडीज आदि।
- कला प्रदर्शन और प्रदर्शनी के अवसर: विश्वविद्यालय नियमित रूप से कला प्रदर्शनियों, संगीत और नृत्य प्रस्तुतियों, नाट्य मंचन और फिल्म स्क्रीनिंग का आयोजन करते हैं। इससे विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने और दर्शकों से जुड़ने का मंच मिलता है।
- सामुदायिक जुड़ाव और विस्तार गतिविधियाँ: कई विश्वविद्यालय अपनी कला गतिविधियों को समुदाय तक ले जाते हैं। वे स्थानीय कलाकारों के साथ सहयोग करते हैं, स्कूलों में कला शिक्षा कार्यक्रम चलाते हैं और सार्वजनिक कला परियोजनाओं में भाग लेते हैं।
- मान्यता और प्रमाणन: विश्वविद्यालयों द्वारा प्रदान की गई डिग्रियाँ और प्रमाण पत्र कला के क्षेत्र में रोजगार और आगे के अध्ययन के लिए मान्यता प्राप्त होते हैं।
- शोध और प्रकाशन को बढ़ावा: विश्वविद्यालय कला के क्षेत्र में शोध को प्रोत्साहित करते हैं और शोध निष्कर्षों को पत्रिकाओं, पुस्तकों और संगोष्ठियों के माध्यम से प्रसारित करते हैं।

4. कला शिक्षा में शोध का महत्व

शोध किसी भी ज्ञान क्षेत्र के विकास और उसकी प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए मौलिक आवश्यकता है। कला शिक्षा भी इसका अपवाद नहीं है। कला शिक्षा में शोध निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण है:

- शैक्षणिक पद्धतियों का विकास और मूल्यांकन: शोध के माध्यम से कला सिखाने और सीखने की अधिक प्रभावी और नवीन विधियों का विकास किया जा सकता है। विभिन्न शैक्षणिक उपागमों (जैसे अनुभवात्मक अधिगम, परियोजना-आधारित अधिगम, सहयोगी अधिगम) की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जा सकता है।

रश्मि गौतम, शिक्षा में विश्वविद्यालयी अंतःक्षेप एवं अनुसंधान की महत्ता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, कला समीक्षा, खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 50-55

- पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता और अद्यतनीकरण: शोध यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि कला शिक्षा का पाठ्यक्रम समकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी परिवर्तनों के अनुरूप हो। यह नए कला रूपों, माध्यमों और सिद्धांतों को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के लिए आधार प्रदान करता है।
- कला के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक प्रभावों का अध्ययन: शोध यह समझने में मदद करता है कि कला शिक्षा किस प्रकार विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक कौशल (जैसे समस्या-समाधान, आलोचनात्मक चिंतन), भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक कौशल को प्रभावित करती है। यह कला शिक्षा के महत्व को सिद्ध करने के लिए साक्ष्य प्रदान करता है।
- कला रूपों का संरक्षण, प्रलेखन और पुनरुद्धार: ऐतिहासिक और पारंपरिक कला रूपों, विशेष रूप से लोक और जनजातीय कलाओं, जो मौखिक परंपराओं पर आधारित हो सकती हैं, का दस्तावेजीकरण और विश्लेषण करने के लिए शोध महत्वपूर्ण है। इससे उनके संरक्षण और पुनरुद्धार में मदद मिलती है।
- नीति निर्माण में सहायक: कला शिक्षा और सांस्कृतिक नीतियों के निर्माण के लिए शोध आधारित डेटा और विश्लेषण महत्वपूर्ण इनपुट प्रदान करते हैं। यह संसाधनों के आवंटन, कार्यक्रमों की योजना और मूल्यांकन में सरकारों और संस्थानों की मदद कर सकता है।
- आलोचनात्मक विमर्श और सिद्धांत निर्माण: शोध कला के इतिहास, सौंदर्यशास्त्र, समाजशास्त्र और मनोविज्ञान जैसे क्षेत्रों में नए सिद्धांतों और आलोचनात्मक दृष्टिकोणों के विकास को बढ़ावा देता है। यह कला की हमारी समझ को गहरा करता है।
- नवाचार और प्रयोग को प्रोत्साहन: शोध कलाकारों और कला शिक्षकों को नए विचारों, सामग्रियों और तकनीकों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करता है। यह कला में नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देता है।
- कला शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार: शोध के माध्यम से कला शिक्षा के मानकों का निर्धारण किया जा सकता है और शिक्षण संस्थानों के प्रदर्शन का मूल्यांकन किया जा सकता है, जिससे गुणवत्ता में निरंतर सुधार संभव होता है।
- कला, संस्कृति और पहचान के अंतर्संबंधों की खोज: शोध यह समझने में मदद करता है कि कला किस प्रकार व्यक्तिगत और सामूहिक पहचान के निर्माण में भूमिका निभाती है, और यह विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के बीच संवाद और समझ को कैसे बढ़ावा दे सकती है।
- कला बाजार और कला प्रबंधन: कला बाजार की प्रवृत्तियों, कला संस्थानों के प्रबंधन और कला के आर्थिक पहलुओं पर शोध भी महत्वपूर्ण है, खासकर पेशेवर कलाकारों और कला प्रशासकों के लिए।

5. शोध की वर्तमान स्थिति एवं चुनौतियाँ (भारतीय संदर्भ में विशेष)

भारत में कला शिक्षा और उसमें शोध की एक लंबी परंपरा रही है, लेकिन अभी भी इस क्षेत्र में कई संभावनाएँ और चुनौतियाँ विद्यमान हैं:

- प्रवृत्तियाँ:
  - पारंपरिक कलाओं और शिल्पों पर शोध में रुचि बढ़ी है।
  - समकालीन भारतीय कला और वैश्विक कला प्रवृत्तियों के अंतर्संबंधों का अध्ययन किया जा रहा है।

रश्मि गौतम, शिक्षा में विश्वविद्यालयी अंतःक्षेप एवं अनुसंधान की महत्ता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, कला समीक्षा, खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 50-55

o कला शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग (जैसे डिजिटल आर्ट, मल्टीमीडिया) पर शोध हो रहे हैं।

o कला थेरेपी और सामुदायिक कला जैसे उभरते क्षेत्रों में भी अनुसंधान की शुरुआत हुई है।

• चुनौतियाँ:

o वित्त पोषण का अभाव: कला अनुसंधान के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की कमी एक बड़ी बाधा है।

o अंतःविषय सहयोग की कमी: कला शोधकर्ताओं और अन्य विषयों के शोधकर्ताओं के बीच सहयोग अभी भी सीमित है।

o पद्धतिगत स्पष्टता का अभाव: कला शोध में, विशेष रूप से अभ्यास-आधारित शोध (practice-based research) में, उपयुक्त शोध पद्धतियों के मानकीकरण और समझ की आवश्यकता है।

o सिद्धांत और व्यवहार के बीच की खाई: अकादमिक शोध और कला अभ्यास के बीच अक्सर एक दूरी देखी जाती है, जिसे पाटने की आवश्यकता है।

o शोध प्रकाशन के लिए मंचों की कमी: कला पर केंद्रित उच्च गुणवत्ता वाली शोध पत्रिकाओं और प्रकाशनों की संख्या बढ़ाने की आवश्यकता है।

o भाषा और पहुंच: अधिकांश उच्च स्तरीय शोध अंग्रेजी में होता है, जिससे क्षेत्रीय भाषाओं में काम करने वाले कलाकारों और शोधकर्ताओं के लिए पहुंच सीमित हो सकती है।

o कला शोध को अन्य अनुशासनों के समकक्ष मान्यता: कभी-कभी कला और मानविकी में शोध को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के शोध की तुलना में कम महत्व दिया जाता है, जो मानसिकता बदलने की आवश्यकता को इंगित करता है।

6. निष्कर्ष

कला शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों के लिए एक अमूल्य निवेश है। यह न केवल सौंदर्यपरक आनंद और सृजनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि यह आलोचनात्मक चिंतन, सांस्कृतिक समझ और मानवीय मूल्यों का भी पोषण करती है। इस महत्वपूर्ण कार्य में विश्वविद्यालयों की भूमिका केंद्रीय है। विश्वविद्यालय कला शिक्षा के लिए आवश्यक बौद्धिक, सृजनात्मक और भौतिक वातावरण प्रदान करते हैं, कलाकारों और कला शिक्षकों को प्रशिक्षित करते हैं, और कला को समाज से जोड़ते हैं।

कला शिक्षा को जीवंत, प्रासंगिक और प्रगतिशील बनाए रखने के लिए निरंतर शोध और नवाचार अपरिहार्य हैं। शोध के माध्यम से हम कला शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं, नई शैक्षणिक पद्धतियों का विकास कर सकते हैं, अपनी समृद्ध कलात्मक विरासत का संरक्षण कर सकते हैं और समकालीन चुनौतियों का सामना करने के लिए कला की शक्ति का उपयोग कर सकते हैं।

भारत जैसे विविधतापूर्ण और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश में, विश्वविद्यालयों को कला शिक्षा और उसमें शोध को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसके लिए पर्याप्त संसाधनों का आवंटन, अंतःविषय सहयोग को बढ़ावा देना, शोध के लिए एक सहायक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना और कला तथा कलाकारों को समाज में उचित सम्मान दिलाना आवश्यक है। एक ऐसी शिक्षा प्रणाली जो कला और शोध को महत्व देती है, निश्चित रूप से एक अधिक संवेदनशील, सृजनशील और विचारशील पीढ़ी का निर्माण करेगी, जो न केवल अपनी संस्कृति को समझेगी बल्कि वैश्विक मंच पर भी महत्वपूर्ण योगदान देगी।

रश्मि गौतम, शिक्षा में विश्वविद्यालयी अंतःक्षेप एवं अनुसंधान की महत्ता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, कला समीक्षा, खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 50-55

7. संदर्भ ग्रंथ सूची

- भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली।
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC). (विभिन्न वर्ष). कला एवं मानविकी में शोध को बढ़ावा देने हेतु दिशानिर्देश एवं रिपोर्टें. नई दिल्ली: UGC.
- सांस्कृतिक संसाधन एवं प्रशिक्षण केंद्र (CCRT). (विभिन्न वर्ष). कला शिक्षा पर वार्षिक रिपोर्ट एवं प्रकाशन. नई दिल्ली: CCRT.
- ललित कला अकादमी. (विभिन्न वर्ष). समकालीन भारतीय कला एवं कलाकारों पर मोनोग्राफ एवं जर्नल. नई दिल्ली: ललित कला अकादमी।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT). (2006). कला शिक्षा पर राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र. नई दिल्ली: NCERT.

कुशाग्र जैन, रंग चित्र, कला समीक्षा, खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 50-55

रंग चित्र

कुशाग्र जैन*

1.
रंगों की बातें,
कैनवस पर चुपचाप हों,
मन मुस्कुराता।

2.
शब्दों का जादू,
दिल से निकले भाव सब,
कविता बन जाए।

3.
तूलिका बोले,
बिन बोले कह जाए वह,
जीवन के रंग।

4.
पढ़ते हैं हम जब,
कहानी बनती जीवन,
सपनों का दर।

5.
शब्दों में शक्ति,
जैसे दीपक की लौ हो,
अंधेरे हर ले।

6.
रंग भरे सपने,
हर चित्र में छिपे हैं,
एक नई दुनिया।

7.
कविता सिखाए,
कैसे दिल से जीते हैं,
हर सुख-दुख साथ।

8.
कहानी बोले,
बीते कल की यादों से,
आज को रोशन।

9.
कला है जीवन,
हर रूप में मुस्काती,
भावों की भाषा।

10.
कवि की कलम से,
उगते हैं उम्मीद के,
नए शब्द-फूल।